महाभारत आधारित पौराणिक रहस्य गाथा

खंड-1

आह्वान

एक विलुप्त पुरातन सत्य जिसने इतिहास को बौना कर दिया

सौरभ कुदेशिया

आह्वान

(महाभारत आधारित पौराणिक रहस्य गाथा : खंड 1)

इस कहानी के सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। इसका किसी भी व्यक्ति या घटना से कोई संबंध नहीं है। यदि किसी व्यक्ति या घटना से समानता होती है, तो वह मात्र एक संयोग होगा। कहानी में वर्णित सभी ऐतिहासिक एवं पौराणिक घटनाओं का समावेश कहानी को रोचकता प्रदान करने के लिए किया गया है।

महाभारत आधारित पौराणिक रहस्य गाथा

खंड 1

आह्वान

एक विलुप्त पुरातन सत्य जिसने इतिहास को बौना कर दिया

सौरभ कुदेशिया

हिन्द युग्म

ISBN : 978-93-87464-85-8

प्रकाशक :

हिन्द-युग्म

सी-31 , सेक्टर-20 , नोएडा (उ.प्र.)-201301

मो.- 9873734046, 9968755908

पहला संस्करण नोशन प्रेस द्वारा साल 2019 में प्रकाशित

पहला हिंद युग्म संस्करण : मार्च 2020

© सौरभ कुदेशिया

Aahwan :

Mahabharat Aadhaarit Pauranik Rahasya Gaatha Khand 1

(A novel by *Saurabh Kudesia*)

Published By

Hind Yugm

C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301

Mob : 9873734046, 9968755908

Email : sampadak@hindyugm.com

Website : www.hindyugm.com

First Edition: Mar 2020

कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने

[भगवान श्रीकृष्ण के सिवा दूसरा कोई भी परम तत्त्व है-यह मैं नहीं जानता।]

स्वर्गीय नचिकेत कुदेशिया की स्मृति में,

श्री चित्रगुप्त महाराज जी और स्व. श्री शारदा शरण सक्सेना जी
के आशीर्वाद से,

परम-पिता श्रद्धेय वासुदेव श्रीकृष्ण जी के चरणों में समर्पित।

आभार

बतौर लेखक अपना पहला उपन्यास आपको प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्षित हूँ।

उपन्यास का लेखन सन् 2003 में आरंभ हुआ, किंतु अपने नियमित कार्यों की व्यस्तता और विषय अनुसंधान में समय लगने के कारण लेखन कार्य धीमी गति से चला। सन् 2008 से लेखन कार्यों ने गति पकड़ी, किंतु व्यक्तिगत कारणों से लेखन कार्य मंथर रहा। इस उपन्यास की सामग्री कई सालों की धीमी आँच में पकाई गई है। इस दौरान मुझे जिन लोगों का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग मिला उन सभी का आभार और धन्यवाद। यहाँ हर किसी का नाम लिखना मेरे लिए संभव नहीं होगा। इसमें किसी और का नहीं, मेरी स्मृति का दोष है।

श्री राकेश पांडे जी (संचालक, बोस्टन कालेज, ग्वालियर) के साथ हुई श्रीमद्भगवद्गीता और वैदिक दर्शनशास्त्र के विषय से जुड़ी अनगिनत अविस्मरणीय चर्चाएँ इस कहानी की पृष्ठभूमि बनाने में मेरी मददगार रहीं। मेरे पुराने मित्र एवं सहकर्मी, डॉक्टर आशीष शर्मा (प्रोफेसर GLA College , मथुरा) ने सन् 2003 में इस कहानी का विषय सुनकर मुझे इसे लिखने का सुझाव दिया। इस विषय को पोषित करने में मेरे वरिष्ठ एवं मार्गदर्शक स्वर्गीय डॉ. दिवाकर सखाराम आगरकर जी (ग्वालियर), मेरे पुराने मित्र सत्यजीत आगरकर (पुणे), मेरी सहकर्मी जयश्री चव्हाण (IBM Pune), और Hangzhou (China) में मेरे सहकर्मी रहे Aaron Lynn ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके साथ ही श्री राजीव सक्सेना जी (सक्सेना मेडिकल एजेंसी, ग्वालियर) के साथ हुई अनेक चर्चाओं ने मेरा मार्गदर्शन करते हुए इस विषय में मेरी रुचि को और गहरा किया।

Tejas Networks, Bangalore में अपने वरिष्ठ सहकर्मी श्री वसंत कुमार जी और श्री वासुदेव राव हुंडी जी के साथ कार्य करते हुए मुझे इस उपन्यास में प्रस्तुत कई विषयों की बारीकियाँ पकड़ने में मदद मिली। यह भी अजीब संजोग रहा कि इस कहानी की औपचारिक शुरुआत और अंत के आसपास मैं Tejas Networks, Bangalore से किसी न किसी रूप में संबद्ध रहा।

IIM Bangalore में मेरे शिक्षक एवं मार्गदर्शक प्रो. शंकर वेंकटगिरि जी, और मेरे सहपाठी श्री मनीष सहानी जी से मुझे इस उपन्यास के विभिन्न पहलुओं को उभारने में सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

Microsoft India P1t. Ltd, Hyderabad में मेरे सहकर्मी श्री सारंग दाते जी ने समय निकालकर उपन्यास के ड्राफ्ट की समीक्षा कर उसे बेहतर बनाने में मेरी मदद की। साथ ही श्री अभिजीत गोर, श्री अभिनव कुमार और श्री क्रांति अवधूला के साथ हुए कई रोचक वार्तालाप कहानी को निखारने में मददगार हुए।

कहानी के रिसर्च में काफी समय लगा। अनेक धार्मिक ग्रंथ, विशेषकर गीता प्रेस (गोरखपुर) और संस्कृति संस्थान (बरेली) द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, और अनेक शोधकर्ताओं के कार्य कहानी को मजबूत करने में मददगार रहे। आपको ये जानकारियाँ उपन्यास के फुटनोट में मिलेंगी।

इस कहानी के मुख्य प्रतीक चिन्ह के बारे में मेरी कल्पना को सजीव करने में यश सक्सेना और स्नेहा जे ने कड़ी मेहनत की। इसके अतिरिक्त इस कहानी में उपयोग में आए सभी चित्र मेरे द्वारा बनाए गए हैं, जिन्हें सँवारने में मेरे पिता श्री सुधीर कुमार सक्सेना जी ने मुझे प्रत्यक्ष सहयोग दिया।

इस दौरान हिंद युग्म परिवार के साथ जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। हिंद युग्म के निदेशक श्री शैलेश भारतवासी जी का अनुभव उपन्यास को उभारने में खासा काम आया। विशेष बात यह रही कि उन्होंने कहानी के किसी पहलू को सुधारने का सुझाव देने के साथ उसे प्रयोग करने का दबाव नहीं बनाया। इससे कहानी से जुड़े कई पक्षों को रोचकता से प्रस्तुत करने में मुझे मदद मिली। संपादक विवेक गुप्ता जी की पैनी और सतर्क दृष्टि से कहानी के वो पहलू भी नहीं छुप पाए जिसे कहानी की गति बढ़ाने के लिए मैंने छोड़ना उचित समझा था।

परिवार के निरंतर सहयोग और आशीर्वाद के बिना मेरे लिए यह उपन्यास आपके समक्ष प्रस्तुत करना असंभव था। मेरे दादाजी स्वर्गीय श्री शारदा शरण सक्सेना, दादी रूप कौर कुदेशिया, पिता श्री सुधीर सक्सेना, माँ श्रीमती सुधा सक्सेना एवं स्वर्गीय श्रीमती शोभा सक्सेना, पत्नी रुचि सक्सेना, मेरे छोटे भाई समीर सरन एवं उनकी पत्नी अवंतिका सक्सेना, और हम सभी की दुलारी नटखट शुभी सक्सेना का धन्यवाद। उपन्यास लेखन के दौरान आपको हुए सभी कष्टों के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

सबसे अंत में मेरे स्वर्गीय पुत्र नचिकेत कुदेशिया का धन्यवाद जिसके साथ बिताए दो वर्षों के प्रत्येक पल की स्मृतियाँ ताजे फूलों की खुशबू की तरह ताउम्र मेरे जीवन में महकती रहेंगी। ये उपन्यास शृंखला एक छोटी

श्रद्धांजलि है उस नन्हे देवदूत के लिए जिसने मुझे सिखाया कि जिंदगी बड़ी नहीं, उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए।

उम्मीद है, यह उपन्यास आपको पसंद आएगा। त्रुटियों के लिए अग्रिम क्षमा-याचना। अपनी प्रतिक्रियाएँ मुझे भेजते रहें।

सौरभ कुदेशिया

हैदराबाद, फरवरी 2020

Email: authorsaurabhkudesia@gmail.com

Facebook: https://bit.ly/30pQgDk

Twitter: @saurabhkudesia

Amazon Author Page: https://amzn.to/2Zoa2Sa

Goodreads Author Page: https://bit.ly/2Z8ySq6

Website: https://www.saurabhkudesia.com

रहस्य की परतें

प्रोटोकॉल

प्रारब्ध

मृत्युशिर

वसीयत

कूरियर (21 मार्च 2009)

खाली लॉकर (21 मार्च 2009)

अविश्वसनीय (24 मार्च 2009)

काला-चिट्ठा (24 मार्च 2009)

अंधा मोड़ (24 मार्च 2009)

शिनाख्त (24 मार्च 2009)

तजुर्बेकार (27 मार्च 2009)

बेगुनाह (27 मार्च 2009)

मददगार (28 मार्च 2009)

पुरातन (30 मार्च 2009)

दस्तक (31 मार्च 2009)

सारथी (1 अप्रैल 2009)

ठहरा समय (1 अप्रैल 2009)

लक्ष्य-भेदन (1 अप्रैल 2009)

शिकार

पुराना आसामी (5 अप्रैल 2009)

छुपा रुस्तम (5 अप्रैल 2009)

कुंडलिनी (6 अप्रैल 2009)

दाढ़ी में तिनका (9 अप्रैल)

मोटी रकम (9 अप्रैल 2009)
मदद
काला साया (9 अप्रैल 2009)
अनाथालय (9 अप्रैल 2009)
मौत की आहट (10 अप्रैल 2009)
झपट्टा (10 अप्रैल 2009)
खानापूर्ति (10 अप्रैल 2009)
भिखारी (11 अप्रैल 2009)
सुरंग (11 अप्रैल 2009)
ब्रेकिंग न्यूज (11 अप्रैल 2009)
अश्व

सूर्यकवच

पुरातत्त्ववेत्ता
स्वर्ण-मृग
यंत्रावली
सिलसिला
वादा
छलावा
डुप्लीकेट
फरेब

प्रोटोकॉल

दुर्घटनाग्रस्त कार खस्ता हालत में सड़क पर उलटी पड़ी थी। गाड़ी का अगला पहिया सड़क के दूसरी तरफ पड़ा था। पिछला पहिया टेढ़ा हुआ एक्सेल में फँसा घूम रहा था। बोनट का कवर टूटकर मुड़ गया था। विंडस्क्रीन और खिड़कियों के काँच के टुकड़े सड़क पर बिखरे थे।

10-12 लोग कार के भीतर फँसे लोगों को बचाने में जुटे थे। एक व्यक्ति कार का दरवाजा तोड़कर जैसे-तैसे जगह बनाते हुए भीतर घुसा। कुछ देर बाद वह खून से लथपथ जख्मी बच्चे को उठाए बाहर निकला। बच्चे की नब्ज जाँचते हुए उसका चेहरा हताशा से लटक गया। उसके साथियों ने कार में फँसे पुरुष और औरत को बाहर निकाला। सभी ने घायलों को स्ट्रेचर पर लादकर एंबुलेंस में लेटाया।

घायलों को लिए एंबुलेंस सायरन बजाती फर्राटे से हाईवे नापने लगी।

सफेद पोलो टी-शर्ट, ब्लू जींस और स्पोर्ट्स शूज पहने, आँखों पर धूप का काला चश्मा चढ़ाए एक चुस्त कद-काठी का व्यक्ति वहाँ बैचैनी से टहलते हुए फोन पर घटना की जानकारी दे रहा था। चेहरे पर दुख और तनाव की गहरी लकीरें खिंची थीं। ध्यान फोन और जाती हुई एंबुलेंस में बँटा हुआ था।

“चीफ! तीनों एक परिवार के लगते हैं।” फोन पर घटना की जानकारी देता हुआ वह अपनी कार में बैठा, “बच्चा नहीं रहा। आदमी और औरत जख्मी हैं। राघव की टीम उनके साथ अस्पताल पहुँचकर मामला सँभाल लेगी।”

दूसरी तरफ से मिले आदेश को सुनते हुए उसने अपने माथे के पसीने को पोंछा।

“हमें कार में ‘वैसा’ कुछ नहीं मिला।” उसने कार की रफ्तार बढ़ाई, “मेजर अपनी टीम के साथ उसके पीछे है। हम उसे छोड़ेंगे नहीं, चीफ!”

प्रारब्ध

मौसम का मिजाज उखड़ा हुआ था। तेज हवा और आँधी के बीच तेज बौछारों के साथ आसमान में रह-रहकर बिजली कड़क रही थी।

अमावस्या की रात्रि के स्याह अंधकार और बिगड़े हुए मौसम में वह सीधी-सपाट और फिसलन भरी पहाड़ी अत्यंत खतरनाक और डरावनी लग रही थी। पहाड़ी के ऊपर कई वर्ग किलोमीटर में फैला सदियों पुराने किले का खंडहर अपनी खोई शानो-शौकत का मूक गुणगान करता प्राचीरों पर काई और जंगली घास की मोटी परतों का बोझ उठाए, बारिश के तेज थपेड़ों से अपने अस्तित्त्व के लिए जूझ रहा था।

इतिहासकारों के लाख प्रयासों के बाद भी किले के कई काले रहस्य खुले नहीं थे। इन्हीं रहस्यों में किले में बने गुप्त सुरक्षा व्यूह और भूमिगत स्थानों की जानकारियाँ भी दबी थीं। शत्रु के हमले अथवा किसी अन्य आपातस्थिति में राज परिवार के लोगों की सुरक्षा के लिए किले में अनेक गुप्त भूमिगत कक्ष बने थे, जिनमें हजारों लोग सुरक्षित रहते हुए सहूलियत से महीनों गुजार सकते थे। ये गुप्त कक्ष अनेक बार विपदा की स्थिति में राज परिवार के संकट-मोचक बने थे।

इन गुप्त मार्गों और स्थानों की जानकारी सिर्फ राज परिवार के सदस्यों और उनकी सुरक्षा से जुड़े कुछ विश्वसनीय लोगों तक सीमित थी। सदियों पुराने किले के गर्भ में सुप्त पड़े इन गुप्त कक्षों की जानकारी रखने वाले वाला राज परिवार का कोई सदस्य जीवित नहीं था।

कोई नहीं जानता था कि इस सदियों पुराने किले के कुछ रहस्य राज परिवारों से भी गुप्त थे। ऐसे ही एक रहस्य के कुछ साझेदार सदियों पश्चात किले के पश्चिमी हिस्से में जमीन से कई तल नीचे बने लंबे-चौड़े आयताकार गुप्त कक्ष में उपस्थित हुए थे।

अवसर खास था। कीटनाशकों और गुलाब जल से स्वच्छ कर सलीके से सजा वह कक्ष अनगिनत मशालों से प्रकाशित था। कक्ष के बीच पुष्पों और केले के पत्तों से सुसज्जित एक ऊँचा मंडप स्थापित था। मंडप के मध्य में हल्दी-सिंदूर के लेप से सजा कई हाथ लंबा, चौड़ा और ऊँचा आयताकार हवन कुंड था। फल, कच्चे चावल, अन्न-धान, और हवन सामग्री से भरे पीतल के बड़े-बड़े थाल और दूध, दही व तरल घी से भरे ताँबे के बड़े-बड़े मटके कुंड के निकट रखे थे। कुंड के चारों तरफ मिट्टी के

अनेक प्रज्ज्वलित दीपक सजे थे। उनके साथ रखे चाँदी के छोटे-छोटे गोलाकार पात्रों में सुलगती धूप सामग्री का सुगंधित धुआँ कक्ष में बिखरा हुआ था।

हवन-कुंड के निकट यज्ञ संचालन करते वयोवृद्ध यज्ञ निदेशक विराजे थे। उनके पीछे उज्ज्वल श्वेत वस्त्र धारण किए विशालकाय देह वाले आठ मुख्य पुरोहित बैठे थे। सभी के सिर मुंडे हुए थे। योग-बल से अग्नि समान दमकते उनके तेजोमय चेहरे से झूलती श्वेत लटाओं के साथ रुद्राक्ष के मोटे दानों वाली लंबी मालाएँ गले में सुशोभित थीं। कलाइयाँ और भुजाएँ चमकीले स्फटिक और रुद्राक्ष की अनगिनत मालाओं से आभूषित थीं।

हर मुख्य पुरोहित के पीछे आठ-आठ के समूह में सहायक पुरोहित विराजित थे। उनके पीछे सौ-डेढ़ सौ लोग मंडप को घेरे खड़े यज्ञ प्रक्रिया देख रहे थे। गेरुआ वस्त्र धारित अनेक सेवक हवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं की व्यवस्था करने में जुटे थे। मशालों के प्रकाश में उनकी छवियाँ कक्ष की दीवारों पर अठखेलियाँ कर रही थीं।

यज्ञ निदेशक लकड़ी के लंबे-लंबे चम्मचों से घी हवन-कुंड में समर्पित कर रहे थे। हर आहुति के साथ हवन की अग्नि कक्ष में गूँजते लयबद्ध पवित्र मंत्रोच्चार के साथ प्रचंड हो रही थी—

प्रजापतिश्चरति गर्भे अंत:। अजायमानो बहुधा विजायते। तस्य धीरा: परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छंति वेधसः। यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहित:। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्महे। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

पूर्णाहुति संपन्न कर वयोवृद्ध यज्ञ निदेशक ने तेज शंखनाद से यज्ञ समाप्ति की घोषणा की। पुरोहितों के साथ कक्ष में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति हवन-कुंड के सामने नतमस्तक हुआ।

वृद्ध यज्ञ निदेशक उठे और अपने काँपते हाथों को हवा में उठाकर उपस्थित लोगों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ पूर्ण होने की संतुष्टि उनके चेहरे पर दमक रही थी।

"सृष्टि के आधार-नियमों की पुनर्स्थापना एवं हिरण्यगर्भ की पवित्र अग्नि में स्वयं को समर्पित करने का दुर्लभ अवसर पुनः आया है।" वृद्ध यज्ञ निदेशक का भारी स्वर कक्ष में गूँजा। चेहरे की झुर्रियाँ कुंड की अग्नि के प्रकाश में स्वर्णिम आभा से झिलमिलाईं।

“वयं समर्पयाम:!” आठों पुरोहितों ने दृढ़ता और आत्मविश्वास के साथ उद्घोष किया। उनके उद्घोष में कक्ष में उपस्थित जनसमुदाय का स्वर जुड़ गया, “वयं समर्पयाम:!”

उद्घोष के बीच जन-समुदाय को चीरते हुए एक युवक सधे कदमों से यज्ञ निदेशक की तरफ बढ़ा। मुँह पर ढके सफेद कपड़े की ओट से उसकी दिव्य तेजोमय आँखें झाँक रही थीं। मुंडे सिर पर चंदन का गाढ़ा लेप था। सुगठित चौड़े सीने पर गर्दन और कंधे को छूते हुए कमर तक लाल जनेऊ झूल रहा था। कमर से बँधी साफ-सफेद धोती पैर के पंजों को छूते हुए लहरा रही थी।

हवन-कुंड के पास पहुँचकर उसने हाथ जोड़ आँखें मूँदकर कुछ मंत्र बुदबुदाए। हवनाग्नि के प्रकाश में उसके बदन पर लगा सुनहरा तरल पदार्थ स्वर्ण की भाँति दमकने लगा। कुंड को प्रणाम कर उसने झुककर उपस्थित पुरोहितों के पैर छुए।

सभी पुरोहितों ने मंत्र बुदबुदाते हुए उसके सिर पर हाथ फेरा।

पुरोहितों से आशीर्वाद प्राप्त कर युवक वृद्ध यज्ञ निदेशक के पास पहुँचा और दृष्टि उनके चरणों पर गड़ाई। इन्हीं चरणों में उसके प्राण और आत्मा निहित थे। इन्हीं चरणों में उसे वो कस्तूरी प्राप्त हुई, जिसकी तलाश में वह जीवन-भर भटकता रहा। जिस दिव्य यज्ञ में प्रतिभागी बनने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं, जिसके लिए सिद्ध-पुरुषों को जन्म-जन्मांतर के अनगिनत चक्रव्यूह भेदने पड़ते हैं, उस दिव्य यज्ञ में सहभागी बनने का सौभाग्य परमात्मा के आशीर्वाद से उसे अनायास प्राप्त हुआ था। जिन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए ज्ञानी महात्मा जन्म और मृत्यु के बंधनों में भटकते हैं, वो सभी उत्तर परमात्मा ने सहज उसकी झोली में डाल दिए थे।

वह अपनी अंतिम यात्रा आरंभ करने के लिए अधीर था। उसका मन और आत्मा संतोष भरी दिव्य शांति से तृप्त थी। इस दिव्य यज्ञ ने उसे जीवन-मृत्यु के चक्र से मुक्त किया था। यह उसकी वर्षों की साधना और अनन्य भक्ति का परिणाम था कि महाभूतों ने इस यज्ञ हेतु उसे चुना। स्वर्ग में उसके पितृ गर्व महसूस कर रहे होंगे। उसके अग्रज सांसारिक चक्र से मुक्त हुए।

सिर पर वृद्ध यज्ञ निदेशक के हाथ का स्पर्श महसूस कर युवक ने गर्दन उठाई। आँखों ने वृद्ध यज्ञ निदेशक के चेहरे पर स्थापित दिव्य आभा और उनकी जीवंत, विश्वास और स्फूर्ति से परिपूर्ण मुस्कान को आत्मसात किया।

यज्ञ निदेशक के पैर छूकर वह सधे कदमों से कक्ष के प्रवेश-द्वार की तरफ बढ़ा।

“शुभमस्तु!” कक्ष में उपस्थित लोगों ने हाथ ऊपर उठाकर उसे आशीर्वाद दिया।

युवक के कक्ष से बाहर निकलने तक वृद्ध यज्ञ निदेशक की तेजोमय आँखें उस पर टिकी रहीं। अपने जीवन में वह अनेक बार इस दृश्य के साक्षी बने थे। अनगिनत साधक मुमुक्षुओं को पुरातन वचन की रक्षा हेतु प्रतिज्ञाबद्ध कर उन्होंने विदा किया था। मुमुक्षुओं की अनगिनत आशाओं का बोझ कंधे पर लादे एक और साधक अपने अभियान पर जा चुका था।

सहसा वृद्ध यज्ञ निदेशक के भीतर ‘प्रथम’ के पुरातन वचन उद्घोष कर उठे-

‘सृष्टि चक्र संचालित करने वाले हाथ बदलेंगे, किंतु इस सृष्टि का सनातन, अनश्वर, और अविनाशी प्रारब्ध सदैव अविचल रहेगा!’

‘वि... विजयी भव पुत्र!’ काँपते गले से वह बुदबुदाए। मन में युवक के लिए लंबी आयु की कामना जाग्रत हुई, किंतु कामना ने शब्दों का रूप लेने से पहले दम तोड़ दिया। जानते थे कि उनकी इच्छा फलित नहीं होगी।

कक्ष में उपस्थित प्रत्येक चेहरे पर असमंजस और अनिर्णय से भरा मौन था। यज्ञ निदेशक के निकट खड़े प्रधान जैसे इसी अवसर की प्रतीक्षा में थे।

“महात्मन्! यह अभियान मुमुक्षुओं का अस्तित्त्व संकट में डाल सकता है!” प्रधान के शब्द संशय और चेतावनी मिश्रित थे।

“अस्तित्त्व!” यज्ञ निदेशक की आँखों से सहस्र प्रश्न तीर बन एक साथ प्रधान की तरफ छूटे, “हिरण्यगर्भ की यज्ञाग्नि अनवरत प्रज्ज्वलित रहेगी। इस पवित्र हवनाग्नि में होम करने के लिए मुमुक्षुओं के हाथ नहीं रुकेंगे। स्मरण रहे!”

प्रधान चुप रहे। इस पुरातन यज्ञ की पूर्ति मुमुक्षुओं का कर्तव्य और धर्म था। यज्ञ निदेशक की निर्णय क्षमता और व्यूह-कौशल पर संदेह करना उसका ध्येय नहीं था, किंतु इस बार चिंताएँ भारी थीं। अनंत यज्ञ की सुरक्षा के साथ मुमुक्षुओं का अस्तित्त्व भी दाँव पर था।

“इस निर्णय पर मंथन करने का समय बीत चुका है। युद्ध अपरिहार्य है।” यज्ञ निदेशक कड़क आवाज में बोले, “अपनी शपथ से पृथक

मुमुक्षुओं का कोई अस्तित्त्व नहीं है।”

प्रधान के शब्द मुख के भीतर ही भाप बनकर उड़ गए। यज्ञ निदेशक अपने अधिकार क्षेत्र में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र थे और प्रधान का अधिकार क्षेत्र यज्ञ निदेशक के आदेश में निहित था। यज्ञ निदेशक के निर्णय की स्वीकारोक्ति में सिर झुकाकर वह पीछे हट गए।

वृद्ध यज्ञ निदेशक की दृष्टि हवनाग्नि पर स्थिर हुई। उसकी ऊष्मा उन्हें भीतर तक सुलगाती प्रतीत हो रही थी। वह प्रधान की चिंताओं से मात्र भली-भाँति अवगत ही नहीं, स्वयं उन चिंताओं से व्यथित थे। चिरकाल से मुमुक्षु भारी मूल्य चुकाकर भी अपने शत्रुओं को साधने और अपने पथ पर अग्रसर रहने में सफल रहे हैं। किंतु इस बार मुमुक्षुओं के दिव्य अनुष्ठान को भंग करने के लिए मानो साक्षात मृत्यु पृथ्वी पर अवतरित हुई थी। यह यज्ञ पूर्व में हुए सभी यज्ञों से कहीं अधिक दुष्कर और रक्त-रंजित होने वाला था।

वृद्ध यज्ञ निदेशक ने गहरी साँस ली। अपने शत्रु को प्रकट करने के लिए उन्होंने जो दाँव खेला था वह औचक और अत्यंत आत्मघाती था। मुमुक्षुओं को यह युद्ध नि:शस्त्र लड़ना था। मात्र लड़ना ही नहीं था, अपितु विजय भी प्राप्त करनी थी। चाहे इस विजय का मूल्य मुमुक्षुओं को स्वयं के अस्तित्त्व से ही क्यों न चुकाना पड़े।

...और मुमुक्षुओं का अंत उस पुरातन सत्य का अंत होगा जो संसार की दृष्टि से सदैव दूर रहते हुए सुरक्षित रहा।

मृत्युशिर

मृत्युशिर-साक्षी द्वारा प्रदत्त यह नाम उसकी एकमात्र पहचान थी। यही पहचान उसके शत्रुओं में भय का पर्याय थी। घात लगाकर अपने लक्ष्य भेदने में वह माहिर था। मौत की तरह निःशब्द और मन के भावों की तरह गुप्त उसका अस्तित्त्व मात्र साक्षी के समक्ष प्रकट था। अपने शिकार के लिए वह 'चलती-फिरती मौत' था जो कब उनके प्राण हर ले स्वयं यमराज भी नहीं बता सके। उसने अनगिनत शिकार किए हैं। आगे भी करेगा।

अपनी कड़ी तपस्या और कठोर समर्पण से उसने साक्षी को साधा था। इस दिव्य अभियान में उसका चयन साक्षी के विश्वास का प्रतिबिंब था।

अपना चेहरा काले कपड़े से ढाँपे वह किले की ऊबड़-खाबड़ जमीन पर लाठी टेकते हुए चलने लगा। बारिश के पानी में भीगी उसकी पुरानी मटमैली धोती बदन से चिपकी हुई थी।

स्याह रात में बारिश के पानी से नहाए किले का वह भूतिया हिस्सा उसकी प्रसन्नता बढ़ा रहा था। बारिश के साथ बहती मंद-मंद शीतल वायु के स्पर्श से उसके रोम-रोम खिल रहे थे। भय और प्रसन्नता मिश्रित विचित्र अनुभूति थी। अद्भुत शक्ति और स्फूर्ति के संचार से उसका प्रत्येक अंग रोमांचित था। थकान और रोमांच के संगम में साँसें थपेड़े खाते हुए ऊपर-नीचे तैर रही थीं। प्रत्येक धड़कन विजय नाद करती प्रतीत हो रही थी।

सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर वह बैठा और अपनी आँखें मूँद लीं। सभी कुछ दिव्य स्वप्न जैसा था। वह उस अकृपनीय सत्य का साक्षी बना था। वही यज्ञ-विधि, वही पुरातन विशिष्ट मंत्रों का निर्दोष उच्चारण, और वही संकृप विधि-अक्षरशः जैसा साक्षी से उसने सुना था। वो युवक जो शपथबद्ध होकर वहाँ से गया था, उस सत्य का प्रतिबिंब था जिसने संसार से सदैव गुप्त रहते हुए मुमुक्षुओं को अमरत्त्व प्रदान किया।

कोई कल्पना नहीं, कोई स्वप्न नहीं, सिर्फ संपूर्ण सत्य।

एको अहम्, द्वितीयो न अस्ति। न भूतो: न भविष्यति:। [1]

उसके अधर विजयी मुस्कान से खिल उठे। इच्छा हुई कि मुँह फाड़कर अट्टहास करे। ऐसा अट्टहास जो समस्त भूलोक और संपूर्ण आकाश को दहला दे। यह उसके धैर्य, चातुर्य, और साक्षी के प्रति उसकी सच्ची निष्ठा का प्रतिफल था। इस कठिन राह पर उसने अनगिनत अग्नि-परीक्षाएँ पार

कीं। अनेक बार पराजय और अपमान का स्वाद चखा। मृत्यु को छलकर वह साक्षी की सेवा के लिए पुनर्जीवित हुआ।

उसकी साधना फलित होने जा रही थी। विजय उससे मात्र कुछ कदम दूर थी। कालजयी साक्षी ने उसे अपनी निष्ठा और भक्ति सिद्ध करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया था। साक्षी की विजय अब उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था।

साक्षी के कहे शब्द उसके दिमाग में गूँज उठे-

'नरमुंड जिसके आभूषण हों, मानव रक्त जिसका भोग, और जिसमें कदम रखते ही संसार के सारे बंधन टूट जाते हों- वीरों के लहू से अलंकृत ऐसी रणभूमि की छटा दुर्लभ है।'

वह काल था। साक्षात मृत्यु का अवतार! उसके मृत्यु अनुष्ठान को थामने में समस्त सृष्टि भी असमर्थ थी। वह साक्षी को निराश नहीं करेगा।

समय कम था। उसे शिकार पर निकलना था। कपड़े से अपना गीला चेहरा पोंछकर उसने सिर और मुँह को उससे ढका और लाठी के सहारे चलते हुए किले के परकोटे की तरफ बढ़ा।

आसमान में उभरी बिजली की चमक में किले का प्राचीर क्षणिक दर्शन देकर पुनः अँधेरे की चादर में गुम हो गया।

---

1 . एक मैं ही सर्वत्र हूँ, दूसरा कोई नहीं। न भूतकाल में था, न भविष्य में होगा।

वसीयत

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

जो पुरुष संपूर्ण भूतों में सबके आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और संपूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अंतर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

[श्रीमद्भगवद्गीता, 6.30]

कूरियर (21 मार्च, 2009)

इंस्पेक्टर जयंत! उम्र करीब 35 साल, पर कसाव लिए चेहरे से झाँकते भोलेपन से वह अपनी असल उम्र से पाँच-छह साल युवा लग रहा था। गोरे, खिले अंडाकार चेहरे पर बड़ी-बड़ी काली आँखों के ऊपर करीने से बनी भौहें उसके माथे के बीच आकर जुड़ रही थीं। उसकी लंबी-सुडौल नाक नीचे से थोड़ी चौड़ी थी। ढीली-ढाली नीली जींस और कोहनियों तक बाँहें मुड़ी काले-भूरे चेक वाली फुल शर्ट उसके गठीले बदन पर फब रही थी।

अपने हल्की गुलाबी होठों पर जीभ फेरते हुए सोफे पर बैठे-बैठे उसने ड्राइंगरूम में नजर घुमाई।

लकड़ी के छोटे पार्टीशन पर टँगे पर्दे से ड्राइंगरूम दो हिस्सों में बँटा था। जिस हिस्से में बैठा था उसमें चार सीटर सोफा-सेट और उसके दाएँ-बाएँ डबल सीटर सोफा सेट रखे थे। सोफे के सामने एक बड़ा आयताकार नीला कालीन बिछा था, जिसके बीच में काले धागों से बुना गोलाकार चक्र था। कालीन के किनारों पर सफेद और सुनहरे के धागों से बुने पंख फैलाए पक्षी बने थे। कालीन के ऊपर शीशम लकड़ी की मध्यम आकार की एक आयताकार टेबल थी।

सोफे के पीछे दीवार पर सफेद सेरामिक की बारीक कारीगरी से बना श्री गणेश जी का बड़ा चेहरा लटका था। उसके नीचे दीवार पर लकड़ी की पुरानी घड़ी टँगी थी, जिसका भारी सुनहरा पेंडुलम आवाज करते हुए दाएँ-बाएँ झूल रहा था। घड़ी की सुनहरी सुइयाँ रोमन अक्षरों में लिखे अंकों पर सरकती हुई 3:35 का समय दर्शा रही थीं। घड़ी के डिजिटल डिस्प्ले पर ताजा तारीख उभरी थी- 21 मार्च, 2009

कदमों की आहट सुन इंस्पेक्टर जयंत पलटा।

श्रीमंत जी थे। सिर के सफेद बाल बेतरतीब ढंग से माथे पर छितराए थे। चेचक के दाग और गहरी झुर्रियों से ढँके मुरझाए साँवले चेहरे पर काले, मोटे फ्रेम के चश्मे से उनकी थकी-सूजी आँखें झाँक रही थीं।

सोफे पर बैठकर उन्होंने अपनी फूलती साँसों को संयमित करते हुए अनमनी फीकी मुस्कान के साथ जयंत को नमस्कार किया। उनके साथ उनकी बहू प्रियंका और छोटा बेटा विराट था। पच्चीस वर्षीय विराट के चेहरे पर यौवन की मासूम आभा थी। नियमित व्यायाम से निखरी उसकी

छह फुट की साँवली काया सुगठित और आकर्षक थी। उसके नाक-नक्श श्रीमंत जी पर गए थे।

लंबे बालों को सादी चोटी में समेटे सफेद साड़ी में लिपटी प्रियंका विराट के निकट एक निष्ठुर काया की तरह सोफे पर बैठी थी। बदन पर गहनों के नाम पर गले में एक काला धागा और हाथ में पीतल का पतला कड़ा था।

प्रियंका को देख जयंत का मन भर आया। रोहन और प्रियंका से उसकी आखिरी मुलाकात 2006 में उनकी शादी के वक्त हुई थी। तब कहाँ सोचा था कि उसके बाद प्रियंका से ऐसे दुखद अवसर पर मिलना होगा।

“अंकल! ट्रेनिंग से लौटा तो इस हादसे के बारे में पता चला। फोन पर आपकी बातों से मामला कुछ गंभीर लगा तो तुरंत चला आया।” जयंत ने बात छेड़ी।

“बात फोन पर बताने लायक नहीं थी, जयंत!” श्रीमंत जी के चेहरे पर घबराहट थी, “तुम रोहन के गहरे दोस्त होने के साथ इस परिवार के सदस्य जैसे हो। हमारा तुमसे वर्षों पुराना रिश्ता है। इसलिए तुमसे इस मामले में बातचीत करना मुझे ठीक लगा।”

“परिजनों से परेशानी साझा करने के लिए इतनी भूमिका क्यों?” जयंत धीरे से बोला।

श्रीमंत जी कुछ देर असमंजस में रहे। फिर अपनी जेब से एक तुड़ा-मुड़ा सफेद लिफाफा निकालकर उन्होंने जयंत को थमाया।

जयंत ने देखा उस लिफाफे पर नत्थी कूरियर की रसीद पर प्राप्तकर्ता के स्थान पर श्रीमंत जी का नाम और उनके घर का पता लिखा था। प्रेषक के तौर पर रोहन का नाम और उसके घर का पता था। रसीद के अनुसार कूरियर विशेष प्राथमिकता के तौर पर 24 फरवरी को कूरियर कंपनी के नई दिल्ली अंतर्राज्यीय बस अड् डा ब्रांच से भेजा गया था।

जयंत ने लिफाफे के भीतर रखे सफेद कागज को निकाला। कागज की पृष्ठभूमि में ऊपर से नीचे तक हल्के-सुनहरे रंग का मोर पंख बना था। ऊपर बाएँ कोने पर रोहन का नाम, पता, और फोन नंबर छपा था। शेष पन्ने पर कंप्यूटर प्रिंटेड काले अक्षर छपे थे—

मेरी सारी चल, अचल संपत्ति में से समस्त टैक्स तथा हर प्रकार के वैध खर्च, बिल आदि देने के बाद शेष बची धन-राशि का इस प्रकार वितरण किया जाए-

मेरी पत्नी प्रियंका कुलश्रेष्ठ को मेरी संपत्ति से 1,00,000 रुपए दिए जाएँ। जीवन के कठिन क्षणों में मेरा साथ देने के लिए मैं उनका ऋणी हूँ। मेरा उनसे निवेदन है कि वह इन रुपयों को अपनी शिक्षा पर खर्च करें। इसके अलावा वह, या उनके मायके का कोई भी सदस्य, मेरी या मेरे परिवार के किसी भी सदस्य की संपत्ति पर भविष्य में किसी प्रकार का कोई दावा नहीं करे और न मेरे परिवार के किसी सदस्य से निजी या सार्वजनिक तौर पर किसी भी तरह से रुपए-पैसों का लेन-देन करे।

मेरे बैंक लॉकर संख्या ए- 15 में रखी समस्त वस्तुओं के अधिकारी मेरे अनुज विराट कुलश्रेष्ठ होंगे। मेरी इच्छा है कि वह लॉकर में रखी वस्तुओं का अपनी विवेकशक्ति से इस्तेमाल करें।

मेरी अप्रकाशित पांडुलिपियाँ मेरे पिता श्रीमंत कुलश्रेष्ठ जी को सौंपी जाएँ। मेरा उनसे अनुरोध है कि वह मेरी पांडुलिपियों को पढ़कर उनमें यथासंभव सुधार कर उन्हें छपवाने का यथोचित प्रबंध करें। इन पांडुलिपियों को सार्वजनिक करने का निर्णय मैं उन पर छोड़ता हूँ। छपाई कार्यों में व्यय होने वाली राशि की व्यवस्था विराट और प्रियंका का हिस्सा देने के बाद शेष धन-राशि और संपत्ति में से हो।

मेरे पिता श्री श्रीमंत कुलश्रेष्ठ जी को उपरोक्त व्यय के पश्चात बची समस्त चल-अचल संपत्ति का एकमात्र उत्तराधिकारी माना जाए। वह इस संपत्ति का उपयोग मेरी पत्नी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से देने के अलावा अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं। मैं अपने पिता श्री श्रीमंत कुलश्रेष्ठ, अनुज श्री विराट कुलश्रेष्ठ, और पत्नी श्रीमती प्रियंका कुलश्रेष्ठ से निवेदन करता हूँ कि बिना किसी वाद-विवाद के इस वसीयत में लिखे हर वाक्य का अक्षरशः पालन करें।

मेरे उक्त वक्तव्यों से स्पष्ट है कि वसीयत में उल्लिखित व्यक्तियों के अलावा मेरी संपत्ति का कोई उत्तराधिकारी नहीं है। मेरी परम-पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि जीवन की कठिनाइयों में वह मेरे परिवार का मार्गदर्शन करें।

सबसे नीचे रोहन का नाम और उसके हस्ताक्षर के साथ तारीख लिखी हुई थी- 24 फरवरी

“रोहन की वसीयत! यह आपको कब और कैसे मिली?” जयंत ने कागज को लिफाफे में रखते हुए पूछा।

“26 फरवरी को रोहन के एक्सीडेंट के दिन!” श्रीमंत जी डरे-सहमे बोले, “वसीयत पर रोहन के हस्ताक्षर हैं, इसलिए इसकी असलियत पर

हमें कोई शक नहीं है। बस इससे जुड़े कुछ सवालों का उत्तर ढूँढ़ने में हमें तुम्हारी मदद चाहिए।”

“कैसे सवाल?” जयंत ने पूछा।

“15 फरवरी से 24 फरवरी तक भैया को तेज बुखार था। वह सारे समय घर पर आराम कर रहे थे।” विराट बुझे स्वर में बोला, “इसलिए 24 फरवरी को वह बस अड्डे गए हों और कूरियर भेजा हो यह बात हमें हजम नहीं हो रही है।”

“वसीयत भेजने के दो दिन बाद एक्सीडेंट में रोहन की मृत्यु होना और एक्सीडेंट के दिन ही वसीयत का आना कुछ सवाल पैदा करता है।” जयंत बोला, “लेकिन ये इतनी बड़ी बात नहीं है।”

“हमारी चिंता सिर्फ कूरियर से जुड़ी नहीं है।” विराट बोला, “17 मार्च को हम वसीयत में लिखी पांडुलिपियों को लेने भैया के फ्लैट पर गए। उनके कमरे का ताला तोड़कर हमें भैया की पांडुलिपि मिली। लेकिन साथ में उनके कमरे से जो मिला वह हमारे गले की हड्डी बन गया।”

“कमरे का ताला तोड़कर!” जयंत चौंका, “मैं कुछ समझा नहीं!”

“रोहन अपने कमरे पर हमेशा ताला लगाकर उसे बंद रखते थे। वह किसी को कमरे में आने नहीं देते थे।” प्रियंका बोली।

“ऐसा क्या खास था उसके कमरे में?” जयंत ने पूछा।

“कमरा नहीं, उसे एक छोटी लाइब्रेरी कहो। रोहन का कंप्यूटर, लैपटॉप, और सारी किताबें वहाँ हैं।” प्रियंका बोली, “घर पर रोहन अधिकांश समय उसी कमरे में गुजारते थे। वह एक बार कमरे में घुसते तो घंटों बाद बाहर आते।”

“इसमें कैसा अचरज?” जयंत बोला, “रोहन बचपन से किताबी कीड़ा था। स्कूल-कॉलेज में वह अधिकतर लाइब्रेरी में ही दिखता था। उसकी पूरी पॉकेटमनी किताबें खरीदने में खर्च होती थी। कॉलेज होस्टल में उसका रूम मिनी लाइब्रेरी के नाम से मशहूर था।”

“बात कुछ और थी, जयंत! पहले रोहन मुझे अपने कमरे में आने देते थे, पर लगभग साल भर पहले उनका व्यवहार बदल गया।” प्रियंका बोली।

“क्या मतलब है आपका?” जयंत ने कुरेदा।

“वह कमरे के दरवाजे पर ताला लगाने लगे। कमरे में घुसते तो दरवाजा बंद कर लेते। कोई उनके कमरे के आसपास भी होता तो वह गुस्से

से उस पर चीखने लगते। घर से जाते वक्त वह कमरे को लॉक करते और चाबी अपने साथ ले जाते। यहाँ तक कि सुबह जल्दी उठ कर वह कमरे की साफ-सफाई करते और कचरा खुद ही फेंकने बाहर जाते थे।” प्रियंका बोली।

“क्या उसके बदले व्यवहार की कोई वजह थी- ऑफिस की कोई परेशानी, रुपए-पैसों की कोई दिक्कत, या फिर कुछ और बात?” जयंत ने पूछा।

“उन्होंने अपनी परेशानी के बारे में मुझे कभी कुछ नहीं बताया। रोहन एक ऐसी किताब बन गए थे जो खुली थी, पर जिसमें लिखा हर अक्षर मेरी समझ से बाहर था।” प्रियंका बुझी आवाज में बोली, “उन्होंने सभी से मिलना-जुलना छोड़ दिया था। सारा समय उस कमरे में घुसे रहते। एक फ्लैट में रहते हुए भी हमारी कई दिनों तक बात नहीं होती। बात होती भी तो सीमित।”

“यह सब कब और कैसे शुरू हुआ?” जयंत ने पूछा।

“यकीन से नहीं कह सकती, पर मेरी प्रेगनेंसी कन्फर्म होने के बाद वह और भी गुमसुम हो गए थे। उनकी आँखों से नींद उड़ गई थी। बस अपने कमरे में खुद को बंद कर लेते या बेचैनी से रात भर घर में टहलते रहते थे।” प्रियंका बोली।

“आपको रोहन के बंद कमरे से कुछ ऐसा मिला जो उसकी परेशानी की वजह बता सके?” जयंत ने पूछा।

“हमें रोहन के कमरे से उसकी पांडुलिपि के साथ कुछ खास चीजें मिली हैं।” विराट गंभीर स्वर में बोला, “पर हमें समझ नहीं आया कि उनका भैया की परेशानी से क्या संबंध है।”

“मुझे उन ‘खास चीजों’ के बारे में जानना है!” जयंत विराट के चेहरे पर नजर गड़ाए बोला।

विराट ने टेबल पर रखी फाइल से कुछ कागज निकालकर जयंत के हाथ में थमाए।

जयंत ने कुछ समय लिया उन कागजों को पढ़ने में।

“निश्चल की डिस्चार्ज रिपोर्ट!” पढ़कर जयंत चौंका, “निश्चल का ऑपरेशन हुआ था!”

“पिछला साल रोहन और प्रियंका की जिंदगी पर काफी भारी रहा, जयंत!” श्रीमंत जी बुझे स्वर में बोले।

जयंत के होठ आपस में चिपक कर रह गए। उसका मन कचोट उठा। श्रीमंत जी की सामान्य-सी बात में उसे अपने प्रति एक दबी शिकायत महसूस हुई। दो साल पहले पुलिस ट्रेनिंग ज्वॉइन करने के बाद से जयंत का रोहन से कोई संपर्क नहीं हुआ था। रोहन किन परेशानियों से जूझ रहा था इसकी जयंत को खबर भी नहीं हुई तो उसकी मदद करने की बात तो बहुत दूर की थी।

“अंकल! मैं गुजरा वक्त वापस लाने से रहा, पर अब आप अकेले नहीं हैं!” जयंत सहानुभूति से बोला, “मुझे बताएँ कि इन दो सालों में रोहन की जिंदगी में क्या हुआ और निश्चल के ऑपरेशन का क्या मामला है?”

“डिलीवरी के बाद निश्चल का बदन सूज गया था।” प्रियंका उतरे चेहरे से बोली, “उसकी त्वचा और होंठ नीले थे। हाथ-पैर के नाखूनों पर भी नीलापन था। दाहिने हाथ की दो उँगलियाँ चिपकी हुई थीं। जन्म के बाद उसकी साँसें उखड़ने लगीं तो डॉक्टरों ने उसे जिंदा रखने के लिए वेंटिलेटर की मदद ली।”

“हे भगवान!” जयंत के मुँह से निकल पड़ा, “ऐसा क्या हुआ था निश्चल को?”

“निश्चल के दिल में छेद था। दिल और फेफड़े आपस में चिपके होने की वजह से उसके फेफड़ों में खून भर रहा था। उसकी साँस उखड़ रही थी और उसकी जान बचाने के लिए ऑपरेशन कर उसके दिल और फेफड़े अलग करना जरूरी था।” प्रियंका का चेहरा बुझ गया, “दो दिन के निश्चल के लिए यह ऑपरेशन कठिन था। ऑपरेशन के बाद भी उसके बचने की संभावना बेहद कम थी।”

“एक तरफ कुआँ, दूसरी तरफ खाई। हम क्या निर्णय लेते, जयंत?” श्रीमंत जी बुझी और रूँधी आवाज में बोले, “निश्चल की हालत बिगड़ने लगी तो हमने भगवान का नाम लेकर ऑपरेशन के लिए हामी भर दी। निश्चल की किस्मत, ऊपरवाले के आशीर्वाद, और डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा की मेहनत से ऑपरेशन सफल रहा और निश्चल को जीवनदान मिला।”

“जन्म से निश्चल की ऐसी हालत कैसे हुई?” जयंत ने हैरानी से पूछा।

“डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा को शक था कि निश्चल की हालत का कारण कोई आनुवंशिक विकृति थी। अपने शक को पुख्ता करने के लिए उन्होंने मेरे और रोहन के कई टेस्ट किए।” प्रियंका बोली, “लेकिन हमारी सभी रिपोर्ट नॉर्मल आने के बाद निश्चल की हालत सभी के लिए पहेली बन गई। निश्चल के जन्म से पहले मेरी नियमित जाँच करने वाली डॉ. महापात्रा भी हैरान थीं कि निश्चल की इन जन्मजात परेशानियों को वह समय रहते क्यों नहीं भाँप पाईं।”

“आपने किसी और डॉक्टर से परामर्श लिया?” जयंत ने पूछा।

“ऑपरेशन के बाद निश्चल एक महीने अस्पताल में डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा की निगरानी में रहा। उस दौरान उन दोनों ने उसकी हालत के बारे में अमेरिका, चीन, जर्मनी और इजराइल के अलावा कई देशों के कार्डियोलॉजिस्ट से परामर्श किया, लेकिन कोई वजह नहीं समझ पाया।” प्रियंका के मुँह से ठंडी आह निकली, “निश्चल लाखों-करोड़ों पैदा हुए बच्चों में एक विरला केस था- एक बेहद दुखद और पीड़ादायक संयोग!”

“क्या रोहन निश्चल को उस हाल में स्वीकार कर पाया?” जयंत ने सहानुभूति से पूछा।

“रोहन निश्चल को बेहद प्यार करते थे। निश्चल के जन्म के बाद वह उसी में खो गए थे। ऑपरेशन के बाद उन्होंने निश्चल को कभी भी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दिया। उसे गोद में उठाए वह घंटों अस्पताल के कॉरिडोर में घूमते रहते थे।” कहते-कहते प्रियंका का गला भर आया। रूँधे गले में शब्द अटकने लगे, “उन्हें निश्चल को घर लाने की जल्दी थी। इस वजह से उन्होंने कई बार डॉ. महापात्रा और डॉ. स्वामी से डाँट भी खाई।”

“क्या निश्चल के जन्म के बाद रोहन के व्यवहार में कोई बदलाव आया?” जयंत ने पूछा।

“जमीन-आसमान का! निश्चल के आने के बाद वह गुमसुम नहीं रहते थे। अपने कमरे में उनका आना-जाना कम हो गया था। घर में उनका अधिकांश समय निश्चल के साथ गुजरता था।” प्रियंका बोली, “शायद पिता बनने के एहसास से वह बदल गए थे।”

“और वो एक्सीडेंट...” जयंत ने अटकते हुए पूछा।

प्रियंका के चेहरे पर पल भर के लिए डर भरी मनहूस शांति हावी हुई। फिर वह थरथराई आवाज में बोली, “निश्चल को डिस्चार्ज कराने के बाद हम उसे हर महीने डॉ. महापात्रा से जाँच कराने अस्पताल ले जाते थे।

अस्पताल जाते वक्त हम हाईवे के पास बने हनुमान मंदिर में माथा टेकते थे।" कहते-कहते प्रियंका अटकी, "26 फरवरी को निश्चल के चेकअप का दिन था। हम मंदिर से अस्पताल के लिए निकले थे कि हाईवे पर हमारी कार एक ट्रक से टकरा गई।"

प्रियंका की आँखों से आँसू की कुछ बूँदें उसके गाल पर टपक गईं।

"मुझे अस्पताल में होश आया। मुझे कुछ मामूली चोटें थीं।" आँसू पोंछते हुए प्रियंका काँपती आवाज से बोली, "लेकिन रोहन और निश्चल नाजुक हालत में आई.सी.यू. में थे।"

"प्रियंका की कॉल मिलते ही मैं और विराट अस्पताल पहुँचे।" श्रीमंत जी भर्राए गले से बोले। गले में घुट रहे शब्द बड़ी मुश्किल से होठों तक पहुँचे। "पर इस बीच निश्चल और रोहन..."

प्रियंका ने बदन ढीला छोड़ अपने चेहरे को काँपते हाथों के बीच ढँक लिया। आँखों से आँसू निर्झर बहते हुए उसकी हथेलियाँ भिगोने लगे।

"जयंत! भैया को खोने का दर्द अब हमें निश्चल की रिपोर्ट के डर के साथ दुगना होकर मिल रहा है।" विराट बोला।

"मैं समझा नहीं! रोहन के कमरे से मिली निश्चल की रिपोर्ट तुम्हारे डर की वजह क्यों है?" जयंत ने सकपकाते हुए पूछा।

"हम नहीं जानते कि हमारा डर कितना जरूरी है, पर निश्चल की डिस्चार्ज रिपोर्ट की सच्चाई जानना हमारे लिए बेहद जरूरी हो गया है।" श्रीमंत जी चश्मा ने उतारकर अपनी भीगी आँखों को पोंछा। "रिपोर्ट के आखिरी पन्ने पर तुम्हें हमारे डर और परेशानी की वजह मिलेगी।"

जयंत ने निश्चल की रिपोर्ट को उठाकर उसके आखिरी पन्ने पर सरसरी नजर डाली। पन्ने पर निश्चल को अस्पताल से डिस्चार्ज के बाद दी जाने वाली सभी दवाओं के ब्योरे के साथ लिखा था-

मरीज के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए संपर्क करें: डॉ. आर आर स्वामी/ डॉ. एल महापात्रा!

साथ में डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के मोबाइल नंबर और ईमेल पते लिखे थे।

जयंत समझ नहीं पाया कि इस साधारण डिस्चार्ज रिपोर्ट में डरने वाली क्या बात थी। चेहरे पर सवालिया निशान लिए उसने श्रीमंत जी को देखा।

“डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा!” श्रीमंत जी जयंत के चेहरे पर लिखे सवाल पढ़कर बोले।

“डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा- निश्चल के दिल का ऑपरेशन करने वाले डॉक्टर!” जयंत बुदबुदाया और हैरानी से पूछा, “ये दोनों आपके डर और परेशानी की वजह क्यों हैं?”

“रोहन के कमरे से मिली यह फोटो देखो!” श्रीमंत जी ने टेबल पर रखी फाइल से एक फोटो निकालकर जयंत के हाथों में थमाई।

फोटो थोड़ी धुँधली थी, पर उसमें शामिल लोगों के चेहरे स्पष्ट दिख रहे थे। बिस्तर पर एक दुबला-पतला नवजात बच्चा मुँह पर ऑक्सीजन मास्क चढ़ाए लेटा था। उसकी नाक में प्लास्टिक की लंबी ट्यूब घुसी थी। छाती पर सफेद पट्टियाँ बँधी थीं। छाती और दोनों हाथों पर टेप की मदद से तार चिपके थे जो बिस्तर के पास रखे उपकरणों से जुड़े थे। बिस्तर के पास नीली ऑपरेशन पोशाक पहने और अपने हाथों में रबर के सफेद दस्ताने चढ़ाए एक पुरुष और एक स्त्री मुस्कराते हुए खड़े थे।

“बिस्तर पर लेटा बच्चा निश्चल है!” श्रीमंत जी ने बताया, “उसके साथ खड़े डॉक्टर डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा हैं।”

“डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा का काम वाकई काबिले-तारीफ है।” जयंत सहजता से बोला।

“अभी तक हम भी यही सोच रहे थे।” विराट ठंडी आह छोड़ते हुए बोला, “असलियत यह है कि अस्पताल के रिकॉर्ड में निश्चल की डिलीवरी और उसके ऑपरेशन का कोई केस दर्ज नहीं है। जिन डॉ. महापात्रा और डॉ. स्वामी को हम निश्चल के सफल ऑपरेशन के लिए भगवान का दर्जा दे रहे थे वे दोनों असल में निश्चल के ऑपरेशन से पहले अस्पताल छोड़ चुके थे और तब से उनका कोई अता-पता नहीं है।”

“निश्चल की डिस्चार्ज रिपोर्ट में साफ लिखा है कि 28 अगस्त, 2008 को उसका जन्म और उसके दो दिन बाद, यानी 30 अगस्त को उसका ऑपरेशन हुआ।” जयंत ने समझाया, “डिस्चार्ज रिपोर्ट पर डॉ. महापात्रा और डॉ. स्वामी के हस्ताक्षर हैं। निश्चल के जन्म और उसके ऑपरेशन के गवाह प्रियंका भाभी और आप लोग हो। फिर निश्चल के ऑपरेशन के बारे में कैसा कन्फ्यूजन?”

“मसला यह है कि उसी अस्पताल के रिकॉर्ड के मुताबिक डॉ. महापात्रा 31 जून, 2008 को और डॉ. स्वामी उसी साल 05 अगस्त को

अस्पताल छोड़ चुके थे।” श्रीमंत जी बोले, “जबकि निश्चल का ऑपरेशन 30 अगस्त को हुआ था।”

“अगर दोनों निश्चल के जन्म से पहले अस्पताल छोड़ चुके थे तो 30 अगस्त, 2008 को अस्पताल में ऑपरेशन किसने किया?” जयंत ने पूछा।

“अब तुम हमारे डर की वजह समझे हो!” विराट बोला।

“शायद डिस्चार्ज रिपोर्ट में तारीखें गलत हों?” जयंत बोला, “निश्चल के डिस्चार्ज होने के बाद डॉ. महापात्रा अस्पताल में हर महीने भाभी की जाँच करती थी। फिर इतनी बड़ी चूक कैसे हो सकती है?”

“हम सिर्फ इतना जानते हैं कि निश्चल का मेडिकल रिकॉर्ड, जिसे भैया और भाभी उसके चेकअप वाले दिन अपने साथ ले जाते थे, हमें भैया के बंद कमरे से मिला।” विराट जयंत को घूरते हुए बोला।

विराट की बात सुनकर जयंत चौंक पड़ा। पूरी घटना दिमाग में घूमी तो विराट की बात का मतलब उसे समझ में आया। निश्चल का मेडिकल रिकॉर्ड रोहन के उस बंद कमरे से कैसे मिल सकता है, जिसकी चाबी सिर्फ रोहन के पास थी और जो 26 फरवरी को एक्सीडेंट के बाद घर जीवित लौटा ही नहीं था।

“कहीं भाभी ने अस्पताल से लौटकर...” जयंत ने एक कमजोर संदेह जोड़ा।

“उस बंद कमरे की चाबी सिर्फ रोहन के पास थी जो 26 फरवरी को एक्सीडेंट में खो गई थी।” प्रियंका बुझे स्वर में बोली, “और 26 फरवरी को निश्चल की जिस रिपोर्ट को हम अस्पताल ले जा रहे थे वह अभी भी मेरे पास है।”

“कहीं रोहन के कमरे से मिली रिपोर्ट भाभी के पास रखी रिपोर्ट की कॉपी तो नहीं?” जयंत रिपोर्ट के पन्ने पलटते हुए बोला।

“हम यह धोखा खा चुके हैं।” कहकर विराट ने फाइल से कुछ कागज निकालकर जयंत को दिए, “यह भैया के कमरे से मिली रिपोर्ट की कॉपी...” फिर उसने फाइल से कुछ और कागज जयंत को दिए, “और यह उस रिपोर्ट की कॉपी जिसे भैया और भाभी 26 फरवरी को अस्पताल लेकर गए थे।”

जयंत तुरत-फुरत सभी कागजों को टेबल पर रख उनका मिलान करने लगा। रिपोर्ट के आखिरी पन्ने में लिखे शब्द पढ़ते हुए उसकी पुतलियाँ

सिकुड़ने लगीं।

"दोनों रिपोर्ट एक जैसी हैं..." जयंत दोनों रिपोर्ट पर नजर घुमाते हुए बुदबुदाया, "...सिवाय तारीखों के!"

"भैया के कमरे से मिली रिपोर्ट के मुताबिक निश्चल का जन्म 25 जून, 2008 को हुआ और 27 जून को उसके दिल का ऑपरेशन हुआ। फिर वह 28 जुलाई को अस्पताल से डिस्चार्ज हुआ।" विराट बोला, "लेकिन भाभी जो रिपोर्ट अस्पताल लेकर जाती थीं उसमें निश्चल के जन्म की तारीख 28 अगस्त 2008 , उसके ऑपरेशन की तारीख 30 अगस्त, और उसे डिस्चार्ज करने की तारीख 1 अक्टूबर दर्ज है।"

"जो रिपोर्ट मेरे पास है उसमें निश्चल से जुड़ी तारीखें सही हैं।" प्रियंका दृढ़ता से बोली, "मैंने निश्चल को जन्म दिया है। जन्म से ही वो हर साँस के लिए लड़ा है। मैं मरते दम तक नहीं भूल सकती कि उसका जन्म 28 अगस्त, 2008 को हुआ था।"

"फिर रोहन के कमरे से मिली इस दूसरी रिपोर्ट का क्या माजरा है? इसमें लिखी तारीख को जब निश्चल पैदा ही नहीं हुआ तो उसका ऑपरेशन कैसे हुआ?" जयंत बुदबुदाया, "ऑपरेशन भी उन डॉक्टरों ने किया जो अस्पताल के रिकॉर्ड के मुताबिक ऑपरेशन की तारीख से एक महीने पहले अस्पताल छोड़ चुके थे।"

"मैं गवाह हूँ कि डॉ. महापात्रा और डॉ. स्वामी ने निश्चल का ऑपरेशन 30 अगस्त को किया था और ऑपरेशन के बाद से वो दोनों उसका नियमित चेकअप करते थे।" प्रियंका बोली।

जयंत के माथे पर बल पड़ गए। सभी जानकारियों को दिमाग में फिट करने की उधेड़बुन में कई नए सवाल पैदा हो गए।

"भाभी! डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा देश के दो प्रख्यात कार्डियोलोजिस्ट हैं।" जयंत ने पूछा, "उन्हें आपकी प्रेगनेंसी में क्या दिलचस्पी थी?"

"वही जानें! मैं उनसे प्रेगनेंसी के दौरान मिली थी। वे मेरा रेगुलर चेकअप करते थे। चेकअप के दौरान मेरी उनसे अधिक बात नहीं हुई जो मुझे उनकी दिलचस्पी पता चलती।" प्रियंका बोली।

"जयंत! डिस्चार्ज रिपोर्ट में तारीखों का हेरफेर, अस्पताल का निश्चल के ऑपरेशन और उसके मेडिकल रिकॉर्ड से अपना पल्ला झाड़ना, और

इन सब बातों का रोहन के देहांत के बाद पता लगाना- यह सब बेहद डरावना है!” श्रीमंत जी बोले।

“आपका डर जायज है, अंकल!” जयंत बोला, “तो आप निश्चल के मेडिकल रिकॉर्ड की जाँच में मेरी मदद चाहते हैं?”

“निश्चल के मेडिकल रिकॉर्ड में गड़बड़ी हमारी सिर्फ एक चिंता है।” श्रीमंत जी पसोपेश से बोले, “हमें रोहन के कमरे से निश्चल के मेडिकल रिकॉर्ड के साथ रोहन के इस्तीफे की कॉपी मिली। तब हमें पता चला कि रोहन 16 जुलाई, 2007 को व्यक्तिगत कारणों का हवाला देकर अपनी नौकरी छोड़ चुका था।”

“जयंत! अब तक हम यही समझते थे कि रोहन भैया 15 फरवरी तक रोज कंपनी जाते थे। हम नहीं जानते कि वह नौकरी छोड़ने के बाद पिछले डेढ़ साल से कहाँ और क्या काम कर रहे थे।” विराट ने जोड़ा।

“शायद वह यह बात बताकर आपको बेवजह परेशान नहीं करना चाहता हो।” जयंत ने अंदेशा जताया, “शायद उसने किसी दूसरी कंपनी में काम शुरू कर दिया हो और आपको यह बात बताने के लिए वह सही समय का इंतजार कर रहा हो।”

“रोहन ने आज तक हम लोगों से कुछ भी नहीं छिपाया था। फिर अचानक...” कहते हुए श्रीमंत जी का चेहरा मायूसी से लटक गया।

खाली लॉकर (21 मार्च, 2009)

श्रीमंत जी का उतरा चेहरा ताकते हुए जयंत समझ नहीं पा रहा था कि श्रीमंत परिवार द्वारा उठाए सवाल वाकई किसी परेशानी का संकेत थे, या फिर यह सब रोहन को खोने के दर्द से उपजा उनके दिमाग का फितूर भर था।

लेकिन रोहन, उसकी वसीयत और निश्चल से जुड़े श्रीमंत परिवार के डर और चिंताओं से वो खुद किनारा नहीं कर पा रहा था। रोहन की वसीयत का संदेहास्पद तरीके से मिलना, उसका लगातार परेशान रहना, खुद को एक कमरे में बंद करना और डेढ़ साल पहले किसी को बिना बताए नौकरी छोड़ना- सभी बातें इशारा कर रही थीं कि वह घर में सभी से कुछ छिपा रहा था।

एक मामूली कागज पर लिखे चंद अक्षरों की रोहन की अप्रत्याशित मिली वसीयत उसकी जिंदगी के कई पहलुओं को छू रही थी। वसीयत की गुत्थी में निश्चल की मेडिकल रिपोर्ट की गुत्थी भी उलझ रही थी। निश्चल की दूसरी मेडिकल रिपोर्ट उस कमरे से मिली जिसमें सिर्फ रोहन का आना-जाना था। क्या रोहन उस मेडिकल रिपोर्ट को सभी से छिपा रहा था?

उसके कमरे से मिली रिपोर्ट और प्रियंका के पास रखी रिपोर्ट में तारीखें अलग होना एक साधारण मानवीय भूल हो सकती है, लेकिन अस्पताल का निश्चल के केस से पल्ला झाड़ लेना रिपोर्ट के कुछ दबे हुए पहलुओं की तरफ संकेत करता लग रहा था। मामले में देश के प्रख्यात कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. महापात्रा और डॉ. स्वामी की भूमिका भी संदेहास्पद लग रही थी। उन्हें प्रियंका की प्रेगनेंसी में क्या दिलचस्पी थी? अगर उन्होंने निश्चल का ऑपरेशन किया तो अस्पताल से उसके ऑपरेशन के सारे मेडिकल रिकॉर्ड कहाँ गए? अगर उन्होंने निश्चल का ऑपरेशन नहीं किया तो डिस्चार्ज रिपोर्ट पर उनके हस्ताक्षर कैसे हैं? उन्होंने निश्चल का ऑपरेशन नहीं किया तो किसने किया? अस्पताल छोड़ने के बाद दोनों का कोई अता-पता नहीं है, पर दोनों अस्पताल छोड़ने के बाद भी निश्चल की नियमित जाँच करते रहे। क्या वो या अस्पताल वाले निश्चल से जुड़ी किसी बात को दबाने की कोशिश कर रहे हैं?

सहसा जयंत की सोच को एक हल्का धक्का लगा। उसने लपककर लिफाफे से रोहन की वसीयत को खींचकर निकाला। उसे पढ़ते हुए कुछ

चुनिंदा शब्द उसकी आँखों में चुभने लगे-

‘मेरे उक्त वक्तव्यों से स्पष्ट है कि वसीयत में उल्लिखित व्यक्तियों के अलावा मेरी संपत्ति का कोई उत्तराधिकारी नहीं है।’

जयंत के दिमाग में वे शब्द गूँजने लगे। उन शब्दों में कुछ खास बात थी जिस पर उसका ध्यान पहले नहीं गया था।

“रोहन के पास कितनी प्रॉपर्टी है?” जयंत ने पूछा।

“उसके फ्लैट की मार्केट वेल्यू एक करोड़ के आसपास है। रोहन और प्रियंका के ज्वॉइंट बैंक अकाउंट में रकम और एफडी मिलकर 90 लाख का आँकड़ा पार करती है।” श्रीमंत जी सहजता से बोले, “कम से कम अब तक हम यही जानते थे!”

“मतलब?” जयंत ने चौंककर पूछा।

“कल हम रोहन के लॉकर से सामान निकालने के लिए बैंक गए थे, लेकिन खाली हाथ लौटे!” श्रीमंत जी बोले, “लॉकर में रखे प्रियंका के सारे जेवर गायब थे!”

“गायब! मतलब लॉकर से जेवर चोरी हो गए?” जयंत ने पूछा।

“चोरी हुए या कहाँ गए, पता नहीं। सिर्फ इतना यकीन से कह सकती हूँ कि 13 फरवरी को रोहन और मैंने लॉकर में सारे जेवर रखे थे।” प्रियंका उतरे चेहरे से बोली, “और बैंक के रिकॉर्ड के मुताबिक 14 फरवरी, 2009 को रोहन ने लॉकर आखिरी बार ऑपरेट किया था।”

“तो जेवर उसने निकाले?” जयंत ने पूछा।

“शायद!” प्रियंका बोली, “रोहन और मेरे अलावा कोई और लॉकर नहीं खोल सकता है।”

“बिलकुल!” जयंत बोला, “हर बैंक लॉकर की दो चाबी होती है। मास्टर चाबी जो बैंक के पास होती है और दूसरी ग्राहक की चाबी जो हर लॉकर की अलग होती है। लॉकर बिना दोनों चाबियों के नहीं खुल सकता है। जिसने लॉकर खोला उसके पास बैंक की मास्टर चाबी के साथ-साथ ग्राहक की चाबी होगी। साथ ही लॉकर वही खोल सकता है जिसके नाम पर लॉकर है। इसलिए यह काम आपका नहीं तो रोहन का होगा।”

“उसे लॉकर से सारे जेवर निकालने की क्या जरूरत पड़ गई?” श्रीमंत जी बुझे स्वर में बोले।

“कोई ऐसी ‘जरूरत’ जिसे वह किसी के सामने जाहिर नहीं कर सकता हो!” जयंत अपने माथे पर हाथ फेरते हुए बोला, “क्या कीमत होगी उन जेवरों की?”

“8-10 लाख!” प्रियंका गुमसुम-सी बोली, “उस दिन लॉकर में रखे गहनों के साथ रोहन ने अपने अकाउंट से सारी रकम भी निकाली- करीब 60 लाख रुपए।”

“तो 14 फरवरी को रोहन ने अपना लॉकर और बैंक अकाउंट दोनों साफ कर दिया।” जयंत के चेहरे पर उलझन घिर आई, “60 लाख रुपए कैश और 8-10 लाख रुपए के जेवर! एक ही दिन में इतनी बड़ी रकम उसने लॉलीपॉप खरीदने के लिए तो नहीं निकाली होगी।”

“लॉलीपॉप तो भैया हमारे लिए छोड़ गए।” विराट बोला, “14 फरवरी को लॉकर से सारे जेवर और अकाउंट से 60 लाख रुपए निकालने के बाद उन्होंने अपने अकाउंट में एक लाख रुपए जमा करवाए थे। भैया के बैंक अकाउंट में अभी यही रकम है।”

“यही रकम रोहन ने वसीयत में भाभी के नाम छोड़ी!” जयंत बुदबुदाया, “शायद रुपए निकालने के बाद रोहन को वसीयत में भाभी के लिए छोड़ी रकम का ध्यान आया हो और इसलिए उसने एक लाख की रकम वापस अपने अकाउंट में जमा कराई हो।”

“अकाउंट में एक लाख की रकम जमा करना एक सोचा-समझा कदम लगता है।” विराट बोला, “क्योंकि 14 फरवरी को अकाउंट से पैसे निकालने और जमा कराने का काम सिर्फ कुछ मिनट के अंतर से एक ही काउंटर से लगातार हुए। यानी भैया ने अकाउंट में कितने रुपए छोड़ने हैं यह सोच रखा था। वह 14 फरवरी को अकाउंट में छोड़ने लायक रकम लेकर आए, अकाउंट में जमा सारी रकम निकाली, और अकाउंट में एक लाख रुपए जमा कराकर लौट गए।”

“लगता है रोहन अपनी वसीयत 14 फरवरी से पहले लिख चुका था। हो सकता है यह पूरा झमेला उसने वसीयत में लिखी अपनी इच्छाओं से मेल करने के लिए किया हो!” जयंत बोला।

“वसीयत में लिखी एक लाख की रकम छोड़ने के लिए इतना झमेला करने की क्या जरूरत थी? एक लाख रुपए अकाउंट में छोड़ बाकी रकम निकालना ज्यादा आसान था।” विराट बोला।

“सवाल सिर्फ वसीयत पर यकीन करने का नहीं, उसमें लिखी रोहन की अंतिम इच्छाओं को पूरा करने का है।” श्रीमंत जी बोले, “अगर रोहन ने अपने अकाउंट में लाख रुपए की रकम केवल वसीयत में लिखी अपनी एक इच्छा पूरी करने के लिए छोड़ी तो अब उसके अकाउंट में वसीयत में लिखी बाकी इच्छाएँ पूरी करने के लिए कोई रकम नहीं बची है।”

“रोहन ने विराट को लॉकर में रखी चीजों का मालिकाना हक दिया, पर लॉकर साफ कर गया।” जयंत बोला, “लॉकर खाली होने की बात वसीयत के बिना भी आप लोगों को देर-सबेर पता लगनी थी। फिर रोहन ने अपनी वसीयत में खाली लॉकर का जिक्र क्यों किया?”

“एक मिनट, जयंत! लॉकर में जेवर नहीं थे, पर लॉकर खाली नहीं था।” कहकर विराट ने अपने मोबाइल फोन में एक तस्वीर खोलकर जयंत को दिखाई-

“इस फोटो का रोहन के खाली लॉकर से क्या नाता है?” जयंत ने उस तस्वीर को देख पूछा।

“यह फोटो भैया के खाली लॉकर के अंदर बने निशान की है। निशान नेल पॉलिश से बना था। नेल पॉलिश की चमक और लॉकर में भरी उसकी खुशबू से हमें अंदाजा हुआ कि निशान हालिया बना है।” विराट बोला।

“13 फरवरी को जब मैंने रोहन के साथ लॉकर खोला था तो उसके भीतर कोई निशान नहीं था।” प्रियंका ने जोड़ा।

“जयंत! यह लॉकर सिर्फ भैया और भाभी खोल सकते थे। भाभी ने नहीं तो यह निशान लॉकर के भीतर किसने बनाया?” विराट पसोपेश में था, “और क्यों?”

“क्या रोहन ने 14 फरवरी को लॉकर से सारे जेवर निकालने के बाद यह निशान बनाया?” जयंत बुदबुदाया। कुछ देर वह उस तस्वीर को घूरता

रहा। फिर पूछा, “क्या आप लोग इस निशान के बारे में जानते है?”

“हम नहीं जानते कि यह कैसा निशान है, लॉकर के भीतर कैसे, कब बना और इसका रोहन से क्या ताल्लुक है।” प्रियंका बोली।

“तो फिर यह निशान लॉकर के भीतर कैसे पहुँचा? क्या इसका गायब जेवरों से कोई संबंध है?” जयंत अपना माथा सहलाते हुए कुछ देर सोच में डूबा रहा। फिर पूछा, “क्या रोहन की जायदाद पर किसी की नजर थी?”

“ऐसी कोई जानकारी हमें नहीं है।” विराट बोला, “रिटायरमेंट के बाद पापा की अच्छी-खासी सेविंग्स है। मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली हुई है। छोटा-मोटा खर्चा पापा पूरा कर देते हैं। भैया के फ्लैट की रजिस्ट्री भाभी के नाम है। वह रोहन के बैंक अकाउंट की प्राइमरी होल्डर भी हैं।”

“जयंत! हमें रोहन की जायदाद में रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं है। रोहन ने अपनी वसीयत में कुछ भी लिखा हो, हमारे लिए उसकी जायदाद की एकमात्र मालकिन प्रियंका है।” श्रीमंत जी के रूँधे गले से थरथराई आवाज निकली, “वह रोहन की जायदाद और रुपए-पैसों का अपनी मर्जी से इस्तेमाल कर सकती है।”

“घर में जब किसी को रोहन की जायदाद से कोई लेना-देना नहीं है, तो सिर्फ एक खाली लॉकर और एक लाख रुपए के बैंक अकाउंट के बारे में रोहन को वसीयत लिखने और उसे एक्सीडेंट के दिन ही आप लोगों तक पहुँचाने की क्या जल्दी पड़ी थी? ये सारी चीजें तो बिना वसीयत के भी आपकी थीं!” जयंत उलझ गया, “जल्दबाजी भी ऐसी कि रोहन ने वसीयत में उन लोगों का जिक्र किया जिन्हें उसकी जायदाद में रत्तीभर दिलचस्पी नहीं है, लेकिन उसे भूल गया जिसे उसके पैसों की सबसे अधिक जरूरत थी।”

सभी ने जयंत को घूरा।

“निश्चल!” जयंत बोला, “अपने इलाज के लिए उसे रुपयों की सबसे अधिक जरूरत थी।”

“एक छह महीने के बच्चे के लिए जायदाद के क्या मायने हैं?” विराट खीझा, “उसकी देखभाल के लिए हम सब थे।”

“वसीयत के मायने वसीयत लिखने वाला निर्धारित करता है।” जयंत सहजता से बोला, “एक्सीडेंट के छह महीने पहले निश्चल रोहन की जिंदगी में आ चुका था, इसलिए वसीयत में निश्चल का जिक्र होना चाहिए था।

उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी रोहन को किसी पर तो डालनी चाहिए थी!”

“रोहन इतना गैर-जिम्मेदार नहीं था।” श्रीमंत जी सकपकाते हुए बोले।

“फिर वसीयत में निश्चल का जिक्र क्यों नहीं है? उलटे भाभी को लाख रुपए की मामूली रकम देकर रोहन ने उन्हें अपने परिवार से दूर रहने की हिदायत दी है।” जयंत बोला, “निश्चल की मेडिकल प्रॉब्लम जानते हुए भी क्या रोहन भाभी से मात्र एक लाख रुपए की मामूली रकम से खुद का और निश्चल का पालन-पोषण करने की उम्मीद लगाए था?”

“हमारे पास ऐसे सवालों की भरमार है, और उनके जवाब ढूँढ़ने में हमें तुम्हारी मदद चाहिए।” श्रीमंत जी बोले।

“वसीयत में निश्चल का नाम न होने की कई वजहें हो सकती हैं। शायद रोहन ने वसीयत निश्चल के जन्म से पहले लिखी हो, या फिर उसने जानबूझकर वसीयत में निश्चल का जिक्र नहीं किया।” जयंत सोचते हुए गंभीरता से बोला, “ठीक एक्सीडेंट वाले दिन वसीयत का मिलना साफ जताता है कि ‘किसी’ को उस एक्सीडेंट के बारे में पता था।”

“मतलब?” विराट ने पूछा।

“अगर रोहन एक्सीडेंट में बचता तो उसकी वसीयत रद्दी थी। कूरियर भेजने वाले दिन यानी 24 फरवरी को रोहन अगर घर से बाहर निकला नहीं तो उस दिन यह वसीयत किसने भेजी? क्या रोहन ने यह वसीयत पहले ही किसी को दे रखी थी?” जयंत बोला।

जयंत की बातें सुनकर यकायक सभी को अपनी साँसें थमती-सी लगीं।

“इस वसीयत के हमारे लिए क्या मायने हैं?” श्रीमंत जी सकपकाते हुए बोले, “वसीयत में ऐसा कुछ नहीं जो हमसे छिपा हो।”

“वसीयत के मायने नहीं होते तो इसे आपके पास भेजने की जरूरत क्या थी?” जयंत बोला, “सोचिए! वसीयत मिलने के बाद आप लोग उसमें लिखी पांडुलिपियों को खोजने रोहन के कमरे में गए। वहाँ आपके हाथ निश्चल की डिस्चार्ज रिपोर्ट लगी। वसीयत को आप फर्जी समझते तो निश्चल के जन्म, उसके ऑपरेशन से जुड़ी गड़बड़ी और डेढ़ साल पहले रोहन के नौकरी छोड़ने की बात आपसे पहले की तरह छुपी रहती।”

“अब हम क्या करें?” श्रीमंत जी ने घबराते हुए पूछा, “अभी तक जितना पता लगा है वही हमारे हाथ-पैर फुलाए हुए है।”

“आप नहीं, मैं करूँगा!” जयंत बोला, “मामले की छानबीन!”

“पुलिस की मदद से यह मामला कहीं बेवजह उलझ न जाए।” श्रीमंत जी सहमे हुए बोले।

“मामला पहले ही उलझा लग रहा है। इसे सुलझाने के लिए छानबीन तो करनी ही होगी।” जयंत गंभीरता से बोला, “वैसे इन सब बातों की जानकारी किसे है?”

“हम तीनों के अलावा सिर्फ तुम्हें!” श्रीमंत जी बोले।

“आप मुझे रोहन की वसीयत, निश्चल की सभी रिपोर्ट, रोहन के बैंक अकाउंट डिटेल्स और लॉकर के भीतर मिले निशान की फोटो दीजिए। मैं अपने स्तर पर छानबीन कर मामला समझता हूँ। फिर सोचते हैं कि आगे क्या करें।” जयंत ने सुझाया।

“यह ठीक रहेगा!” श्रीमंत जी तनिक आश्वस्त हुए।

“आपके पास रोहन और निश्चल का डेथ-सर्टिफिकेट और एक्सीडेंट की पुलिस रिपोर्ट की कॉपी है?” जयंत ने पूछा।

“हाँ! एक्सीडेंट के दिन अस्पताल में पास के थाने से एक इंस्पेक्टर आया था। एक्सीडेंट के बाद उसने ही रोहन, प्रियंका और निश्चल को अस्पताल पहुँचाया था और एक्सीडेंट की सारी कागजी खानापूर्ति की थी।” श्रीमंत जी बोले।

“और वही इंस्पेक्टर मेरा बयान लेकर गया था!” प्रियंका ने जोड़ा।

“ठीक है! मैं उस इंस्पेक्टर को ढूंढ़कर एक्सीडेंट की जानकारी निकलवाता हूँ।” कहकर जयंत ने अपने मोबाइल से सब-इंस्पेक्टर राठौड़ का नंबर डायल किया।

“राठौड़! बैंक डिटेल्स भेज रहा हूँ।” जयंत ने फोन पर उसे निर्देश दिए, “बैंक में लगे सभी सीसीटीवी कैमरों की 13 फरवरी से लेकर 26 फरवरी तक की फुटेज निकलवाओ।”

“बेटा! तुम खर्चे की चिंता मत करना। मेरा जो कुछ है वह रोहन, विराट और प्रियंका का है।” श्रीमंत जी बोले।

“वह चिंता आप छोड़िए!” जयंत बोला, “मैं आपकी दिक्कतें कम करने आया हूँ, बढ़ाने नहीं!”

श्रीमंत जी की आँखों में सुखद अविश्वास के साथ उम्मीद की चमक तैर गई।

अविश्वसनीय (24 मार्च, 2009)

गाड़ी के भीतर झाँकते ही वह पसीने-पसीने हो गया। ड्राइवर की दिल-दहलाने वाली हालत ने उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम कर दी। ड्राइवर का चेहरा देख उसके भीतर डर की झुरझुरी पैदा हो रही थी।

वह जाँच चुका था। ड्राइवर की नब्ज बंद थी।

गनीमत थी कि सुबह का समय था। भारी ट्रैफिक अभी शुरू नहीं हुआ था। इधर आने वाली गाड़ियाँ उसकी टीम दुर्घटनास्थल से काफी पहले रोक रही थी। पर इंतजाम काफी नहीं था। मामला फैलता तो सँभालना मुश्किल हो जाता।

“यह वही है, चीफ!” वह फोन कान पर लगाए बोला। घबराहट की वजह से बोलते हुए साँस फूल गई, “हमें देर हो गई। यह मर चुका है, चीफ!”

“तुम्हें यकीन है?” दूसरी तरफ से चीफ का चिंता में डूबा आश्चर्यमिश्रित प्रश्न आया।

“100 परसेंट, चीफ!” उसने काँपती आवाज से जवाब दिया।

फोन के दूसरी तरफ कुछ पल के लिए हताशा में घुली शांति छाई रही। फिर चीफ की बेचैनी भरी आवाज आई, “यह कैसे हो सकता है?”

“पता नहीं, चीफ!” डरते-डरते उसने एक नजर ड्राइवर के चेहरे को देखा। यकीन करना चाहता था, पर नहीं हुआ। ड्राइवर के चेहरे से नजर हटाना आसान नहीं था, और उसे देखते रहना और भी मुश्किल। चाहता था कि ड्राइवर की लाश निकालकर साथ ले जाए, पर लाश निकालने की कोशिश कई और प्राणों पर भारी पड़ सकती थी। दुर्घटनाग्रस्त वैन ऐसी हालत में थी कि ड्राइवर को बाहर निकालने में समय लग सकता था।

“इसे निकालना मुश्किल है। हम ज्यादा देर ट्रैफिक नहीं रोक सकते है।” उसने बताया।

“सब कुछ रिकॉर्ड करके निकलो वहाँ से!” चीफ ने आदेश दिया, “पुलिस को हैंडल करने दो। लाश पर नजर रखना!”

“चीफ! इसे यहाँ छोड़ा तो प्रॉब्लम हो सकती है!” वह चिंता से बोला।

“नहीं छोड़ा तो उससे बड़ी प्रॉब्लम होगी!” चीफ ने बात समाप्त की।

वह भागकर अपनी कार में बैठा। यह सुनहरा मौका हाथ से फिसलने से वह हताश था, पर चीफ के आदेश को चुनौती देना ओखली में सिर डालने जैसा था। वैसे भी इस केस में कई सिर फूट चुके थे और गलती की कोई गुंजाइश नहीं थी।

अपने साथियों के साथ कार में बैठकर उसने कार आगे बढ़ाई। कुछ दूर आने के बाद उसने कार में रखे दूसरे मोबाइल से पुलिस कंट्रोल रूम का नंबर डायल किया।

बात पूरी कर उसने मोबाइल से सिम निकाली और उसे तोड़कर अपनी जेब में सरका दिया।

काला-चिट्ठा (24 मार्च, 2009)

टेबल पर फाइलें बिखरी हुई थीं। इंस्पेक्टर जयंत एक फाइल उठाता, कुछ देर उसके पन्नों पर नजर मारता और फिर खीझकर उसे वापस टेबल पर पटक देता। जानकारियाँ कई थीं, पर जाँच आगे बढ़ाने में कोई भी जानकारी मददगार नहीं थी।

टेबल के दूसरी तरफ खड़ा सब-इंस्पेक्टर राठौड़ चुपचाप फाइलों की उठा-पटक देख रहा था। वह कद में जयंत के मुकाबले थोड़ा नाटा था, पर लंबाई की कमी उसने फिटनेस से पूरी की थी जो उसके व्यक्तित्व पर चार चाँद लगा रही थी।

इंस्पेक्टर जयंत के साथ कई साल काम करने के अनुभवी राठौड़ के लिए उसका उखड़ा मूड भाँपना आसान था।

“कैसे हो सकता है, राठौड़?” जयंत अपना माथा सहलाते हुए बोला, “पंडित, दर्शनार्थी या ठेले वाला- कोई तो रोहन के एक्सीडेंट का गवाह होगा?”

“सर! मंदिर की स्थापना कुछ महीने पहले हुई है। नया है तो ज्यादा प्रसिद्ध नहीं है। कोई परमानेंट पुजारी या स्टाफ नहीं है। कभी-कभार इक्का-दुक्का लोग वहाँ चले आते हैं। दर्शनार्थियों की भीड़ नहीं है तो मंदिर से चार-पाँच किलोमीटर दूर तक न कोई दुकान है, न कोई होटल।” राठौड़ एक साँस में बोल गया, “एक प्रसाद और फूल बेचने वाला पिछले कुछ दिनों से वहाँ ठेला लगाने लगा है, पर उससे एक महीने पहले हुए एक्सीडेंट के बारे में कुछ जानकारी नहीं मिली।”

जयंत ने अपना माथा सहलाया। एक्सीडेंट का चश्मदीद गवाह नहीं मिलने से जाँच का लंबा खिंचना तय था।

“मैंने कन्फर्म किया है कि हनुमान मंदिर थाना क्षेत्र में 26 फरवरी को हुए किसी एक्सीडेंट की रिपोर्ट दर्ज नहीं है। एक्सीडेंट के बाद रोहन, निश्चल और प्रियंका को जिस अस्पताल में ले जाने की बात श्रीमंत जी ने बताई है वहाँ भी एक्सीडेंट का कोई केस दर्ज नहीं है।” राठौड़ बोला, “मुझे तो शक है कि यह एक्सीडेंट हुआ भी था या नहीं!”

“अस्पताल से निश्चल और रोहन का डेथ-सर्टिफिकेट जारी हुआ है।” जयंत बोला।

“उस अस्पताल में एक्सीडेंट का कोई केस आया नहीं तो वहाँ रोहन और निश्चल के इलाज की बात ही नहीं उठती है।” राठौड़ बोला, “डेथ-सर्टिफिकेट जारी करने का कोई कारण ही नहीं था!”

“तो क्या रोहन और निश्चल का डेथ-सर्टिफिकेट फर्जी है?” जयंत बोला, “उस इंस्पेक्टर का क्या जिसने रोहन, प्रियंका और निश्चल को अस्पताल पहुँचाया और एक्सीडेंट की कागजी खानापूर्ति की थी?”

“उसकी तलाश जारी है, सर!” राठौड़ बोला, “पर अस्पताल से एक्सीडेंट की कोई जानकारी नहीं मिली।”

“यह क्या तमाशा है?” जयंत खीझते हुए बोला।

“तमाशा ही लगता है, सर! इस तमाशे का दूसरा नमूना रोहन की कंपनी में मिला।” राठौड़ बोला, “श्रीमंत परिवार ही नहीं, रोहन की कंपनी में भी कोई नहीं जानता कि उसने नौकरी क्यों छोड़ी और नौकरी छोड़ने के बाद से कहाँ काम कर रहा था।”

“डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा की क्या खबर है?”

“उनके बारे में जानकारियाँ टुकड़ों में मिल रही हैं।” राठौड़ ने टेबल पर रखी एक फाइल खोलकर जयंत की तरफ बढ़ाई, “अस्पताल से मिले उनके सर्विस रिकॉर्ड के मुताबिक डॉ. महापात्रा ने 31 जुलाई, 2008 और डॉ. स्वामी ने 5 अगस्त, 2008 को अस्पताल छोड़ा था।”

“यानी श्रीमंत जी की जानकारी सही थी।” जयंत फाइल पढ़ते हुए बोला, “अस्पताल छोड़ने के बाद दोनों ने किस दिशा का रुख किया?”

“दोनों गायब हो गए यही कहा जा सकता है। दोनों के सर्विस रिकॉर्ड में पुराना एड्रेस है। उनके पुराने पड़ोसियों और मकान के खरीदारों के पास उनके अस्पताल का एड्रेस है।” राठौड़ बोला, “दोनों ने अपने मकान सर्किल रेट पर बेचे हैं। मकान की रजिस्ट्री में भी परमानेंट एड्रेस के नाम पर अस्पताल का एड्रेस है। डॉ. स्वामी ने 2 सितंबर, 2008 को 40 लाख में और डॉ. महापात्रा ने 9 नवंबर, 2008 को 30 लाख रुपए में अपना फ्लैट बेचा था।”

“कौन-सी आफत आन पड़ी थी दोनों पर जो उन्हें अपने घर ऐसे बेचने पड़े?” जयंत बुदबुदाया।

“देश के दो विख्यात कार्डियोलॉजिस्ट गायब हैं और किसी को कानों-कान खबर नहीं है!” राठौड़ मुँह बिचकाते हुए बोला, “उनके गायब होने से

कोई परेशान नहीं हुआ। न किसी ने उन्हें ढूँढ़ने की कोशिश की, न उनके गायब होने की सूचना पुलिस को दी।”

“लेकिन हमें उनकी चिंता है। निश्चल की जन्मतिथि और उसकी मेडिकल रिपोर्ट में गड़बड़ी के तार उन दोनों से जुड़े हैं।” जयंत बोला, “तुमने अस्पताल के रिकॉर्ड में दर्ज उनके पुराने लैंडलाइन या मोबाइल नंबर ट्रेस किए?”

“दोनों के मोबाइल नंबर पिछले चार-पाँच महीनों से बंद हैं। उनके साथी डॉक्टर के पास और अस्पताल के रिकॉर्ड में उनके वही पुराने नंबर हैं।” राठौड़ ने बताया, “निश्चल की मेडिकल रिपोर्ट में लिखे दोनों के ईमेल अकाउंट अस्पताल के थे जो उनके अस्पताल छोड़ने के साथ बंद हो गए। उनका कोई करीबी साथी या रिश्तेदार भी नहीं मिला जो उनके बारे में कुछ बता सके।”

“और उनका अस्पताल वाला नंबर?” जयंत ने पूछा।

“अस्पताल के नियमानुसार किसी डॉक्टर के सर्विस छोड़ने पर उसका फोन नंबर आने वाले डॉक्टर को अलॉट हो जाता है। डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के नंबर अभी किसी दूसरे डॉक्टर को अलॉट नहीं हुए हैं।” राठौड़ ने बताया, “मैंने अस्पताल के उनके फोन नंबर और उनके मोबाइल नंबर सर्विलेंस पर डाल दिए हैं। शायद कुछ ब्रेक मिल जाए।”

“गुड! उनके अस्पताल छोड़ने की कुछ वजह पता चली?”

“दोनों ने अपने व्यक्तिगत कारणों का हवाला देकर अस्पताल से इस्तीफा दिया। दो काबिल डॉक्टरों के अचानक इस्तीफा देने से सभी हैरान थे, पर उनके इस्तीफे की असल वजह कोई नहीं जानता है।”

“अस्पताल में उनका किसी से कोई झगड़ा तो नहीं हुआ?”

“ऐसी कोई बात पूछताछ में नहीं निकली। दोनों इज्जतदार डॉक्टर थे। पूरा कॅरियर बेदाग और साफ-सुथरा है।”

“अक्सर साफ-सुथरी चीजों के पीछे काले कारनामे छुपे होते हैं, राठौड़! सब कुछ अच्छा चल रहा था तो किस व्यक्तिगत कारण के चलते दोनों ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दिया?” जयंत गंभीरता से बोला, “क्या उन्हें दूसरे अस्पताल से मोटी रकम का ऑफर मिला था?”

“अस्पताल छोड़ने के बाद दोनों ने किसी दूसरी जगह ज्वॉइन किया हो या खुद का कुछ काम शुरू किया हो, ऐसी कोई जानकारी भी नहीं मिली,

सर!”

“दोनों जिंदा हैं कि नहीं?” जयंत अपना माथा सहलाते हुए बुदबुदाया।

“इसका भी कोई जवाब नहीं है। मुझे तो उनके इस्तीफे की वजह ढूँढ़ने से ज्यादा उनकी चिंता हो रही है।”

“अस्पताल में निश्चल का कोई रिकॉर्ड मिला?” जयंत ने पूछा।

“अस्पताल के रिकॉर्ड रूम से डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के कई मरीजों के रिकॉर्ड मिले, पर उनमें निश्चल का रिकॉर्ड नहीं है। मैंने अस्पताल के कई लोगों से पूछताछ की, पर कुछ हाथ नहीं लगा।” राठौड़ बोला, “निश्चल के ऑपरेशन के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। फिलहाल यही कहना ठीक होगा कि अस्पताल में न निश्चल का जन्म हुआ और न उसका ऑपरेशन।”

“कोई वाकई कुछ नहीं जानता या किसी वजह से उनके मुँह सिले हुए हैं?” जयंत पसोपेश में पड़ गया, “दोनों वजहें हमारे लिए फायदेमंद नहीं हैं। हमें बंद मुँह खोलने होंगे। श्रीमंत परिवार और अस्पताल वालों में से कोई एक तो झूठ बोल रहा है।”

“इस झूठ की कोई सॉलिड वजह होगी, सर!” राठौड़ बोला, “एक नई बात पता चली है। 17 अक्टूबर, 2008 को अस्पताल के रिकॉर्ड रूम में शॉर्ट-सर्किट से आग लगी थी। उस आग में कई मरीजों के रिकॉर्ड जलकर खाक हो गए।”

“लेट मी गेस! बचे हुए रिकॉर्ड में निश्चल का रिकॉर्ड नहीं है!” जयंत बोला।

“राइट!” राठौड़ मुस्कराया, “अस्पताल ने आग की इस घटना को दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह बदनामी का डर भी हो सकता है और किसी काले कारनामे को दबाने की कोशिश भी!”

“बिना छानबीन के कहना मुश्किल है कि रिकॉर्ड रूम में आग लगी या लगाई गई!” जयंत की भौहें ऊपर चढ़ गईं, “पर यह अजीब इत्तेफाक है कि रिकॉर्ड रूम में आग लगने के आसपास डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा ने अपना मकान बेचा।”

“मामले की तह में जाने के लिए हमें कई गड़े मुर्दे उखाड़ने पड़ेंगे।” राठौड़ गंभीरता से बोला।

“और तुम वह शाकाहारी हो, जिसे गड़े मुर्दे उखाड़ने से परहेज नहीं है!” जयंत के चेहरे पर शरारती मुस्कान थिरकी।

“कैसा परहेज, सर? आप जानते हैं कि ऐसे पुण्य के कामों में तो मैं हमेशा आगे रहता हूँ। मैंने लगे हाथों डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के बैंक अकाउंट खँगाले हैं।” राठौड़ ने चहकते हुए टेबल से एक फाइल उठाकर जयंत को थमाई, “यह दोनों के बैंक अकाउंट का काला-चिट्ठा है।”

“काला-चिट्ठा?” जयंत की उत्सुक नजरें फाइल के पन्नों पर सरकने लगीं।

“पिछले छह सालों से हर महीने की दस तारीख को मुंबई का एक हीरा व्यापारी राजेंद्र प्रसाद डॉ. स्वामी के अकाउंट में पौने पाँच लाख रुपए की रकम जमा करता रहा। रकम जमा कराने का यह सिलसिला 10 फरवरी, 2002 से शुरू होकर 12 जुलाई, 2008 को खत्म हुआ।”

“यानी पिछले साढ़े छह सालों में करीब साढ़े तीन करोड़ रुपए डॉ. स्वामी की भेंट चढ़े।” जयंत बोला, “डॉ. स्वामी पर राजेंद्र प्रसाद इतना मेहरबान क्यों था?”

“इसका अधूरा जवाब अस्पताल में लगी आग से बचे राजेंद्र प्रसाद के मेडिकल रिकॉर्ड में मिला।” राठौड़ बोला, “राजेंद्र प्रसाद दिल का मरीज था। सात साल पहले यानी 2 जुलाई, 2001 को डॉ. स्वामी ने उसकी ओपन हार्ट सर्जरी की थी। सर्जरी के बाद से डॉ. स्वामी उसका रेगुलर चेकअप करते थे। चेकअप की फीस वह हर महीने डॉ. स्वामी के बैंक अकाउंट में जमा करता था।”

“पौने पाँच लाख रुपए हर महीने ओपन हार्ट सर्जरी के फॉलोअप के लिए!” जयंत चौंका, “कितने दिल लगे हुए थे राजेंद्र प्रसाद के भीतर? डॉ. स्वामी क्या होलसेल हार्ट सर्जरी की दुकान खोले बैठे थे?”

“इलाज की आड़ में दोनों के बीच कोई खिचड़ी तो पक रही थी।” राठौड़ मुस्कराया, “राजेंद्र प्रसाद ने 2 जुलाई, 2001 को अपनी सर्जरी के लिए करीब छह लाख रुपए की फीस अस्पताल के अकाउंट में जमा कराई। ऑपरेशन के बाद वह कुछ समय अस्पताल में रहा। अस्पताल से छूटने के बाद वह डॉ. स्वामी से अपनी जाँच कराने साल में सिर्फ दो बार आया। उसने डॉ. स्वामी से अपनी दोनों मुलाकातों के लिए अस्पताल में फीस भरी-प्रति मुलाकात 2,000 रुपए! इन दो मुलाकातों में राजेंद्र प्रसाद को डॉ. स्वामी से ऐसी मुहब्बत हुई कि वह 10 फरवरी, 2002 से उनके अकाउंट में हर महीने पौने पाँच लाख रुपए जमा कराने लगा।”

“100 रुपए की खिचड़ी में पौने पाँच लाख रुपए प्रति महीने का घी! ऐसी मुहब्बत करने वाला भगवान सभी को दे।” जयंत बोला, “कब मिला रहे हो इस दिलदार राजेंद्र प्रसाद से?”

“मिलने की इच्छा तो मेरी भी थी, पर हम दोनों की इच्छा अधूरी रहेगी। 15 फरवरी, 2003 को एक एक्सीडेंट में राजेंद्र प्रसाद की मौत हो गई।”

“तो क्या डॉ. स्वामी के अकाउंट में 12 जुलाई, 2008 तक पौने पाँच लाख रुपए प्रति महीने राजेंद्र प्रसाद के मुर्दे का इलाज करने के लिए आ रहे थे?” जयंत ने चौंकते हुए पूछा।

“राजेंद्र प्रसाद ने डॉ. स्वामी के अकाउंट में हर महीने ये रुपए ऑनलाइन ट्रांसफर करने के लिए बैंक से विशेष अनुरोध किया था। रोजाना करोड़ों रुपयों का लेनदेन करने वाले राजेंद्र प्रसाद जैसे मोटे आसामी के अकाउंट से प्रति महीना पौने पाँच लाख रुपए का ट्रांसफर होना बैंक के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी।” राठौड़ बोला।

“यह लेनदेन बैंक और राजेंद्र प्रसाद के घरवालों से पूरे छह साल कैसे छुपा रहा?”

“बैंक को उसकी मौत की खबर नहीं थी और राजेंद्र प्रसाद के घरवालों को उसके इस अकाउंट की खबर नहीं थी। नतीजतन उसकी मौत के बाद भी राजेंद्र प्रसाद के अकाउंट से डॉ. स्वामी के अकाउंट में हर महीने यह रकम बदस्तूर आती रही। रकम भेजने का यह सिलसिला तब थमा जब राजेंद्र प्रसाद के अकाउंट में बैलेंस नहीं बचा।”

“डॉ. स्वामी इस फ्री रकम का खुले दिल से स्वागत करते रहे। इंटरेस्टिंग!” जयंत बोला, “पूरे छह साल तक हर महीने पौने पाँच लाख की रकम किसी छोटे-मोटे मर्ज के इलाज के लिए मिलने से रही।”

“मुझे शक है कि इलाज की आड़ में डॉ. स्वामी कुछ ऐसा काम कर रहे थे जो राजेंद्र प्रसाद की मौत के छह साल बाद भी जारी रहा। साथ ही राजेंद्र प्रसाद के भेजे घी का स्वाद डॉ. महापात्रा ने भी चखा।” राठौड़ बोला, “क्योंकि 19 जुलाई, 2008 को डॉ. स्वामी के अकाउंट से डॉ. महापात्रा के अकाउंट में 10 लाख की रकम ट्रांसफर की गई थी।”

“किस खुशी में?”

“डॉ. महापात्रा ने करीब एक साल तक डॉ. स्वामी की रिसर्च असिस्टेंट के तौर पर काम किया था। बदले में उन्हें डॉ. स्वामी से पचास हजार रुपए

प्रति महीना वजीफा मिलता था। 19 जुलाई को डॉ. स्वामी के अकाउंट से डॉ. महापात्रा के अकाउंट में ट्रांसफर हुई 10 लाख की रकम इसी वजीफे का हिस्सा लगती है।”

“पचास हजार रुपए प्रति महीने के हिसाब से साल भर का वजीफा छह लाख रुपए हुआ। कौन-सी जादू की छड़ी से छह लाख की रकम 10 लाख रुपए में बदल गई?” जयंत ने पूछा।

“यह जादू तो डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा से सीखना होगा, सर!” राठौड़ मुस्कराया।

“अभी दोनों के बैंक अकाउंट की सेहत कैसी है?”

“डॉ. महापात्रा के अकाउंट में 40-45 लाख रुपए हैं।” राठौड़ फाइल के पन्ने पढ़ते हुए बोला, “जिसमें से 10 लाख रुपए की रकम डॉ. स्वामी के अकाउंट से 20 फरवरी, 2009 को जमा हुई, 30 लाख रुपए की रकम उन्हें मकान बेच कर 19 दिसंबर, 2008 को मिली और बाकी की रकम अस्पताल में काम करने के दौरान मिली है। पिछले तीन महीनों में उन्होंने अपने अकाउंट से करीब सवा लाख रुपए की रकम निकाली है।”

“और डॉ. स्वामी कितनी रकम दबाए बैठे हैं?”

“डॉ. स्वामी के अकाउंट में एक करोड़ रुपए तीस लाख रुपए के करीब रकम है। इसमें से करीब 50 लाख रुपए की रकम उन्हें पिछले छह सालों में राजेंद्र प्रसाद से मिली और 40 लाख रुपए अपना पुराना फ्लैट बेचकर मिले। बाकी 25-30 लाख रुपए उनके बैंक अकाउंट में जमा हैं। फिक्स्ड डिपॉजिट और शेयर मार्केट में इन्वेस्ट की गई रकम को जोड़ा जाए तो डॉ. स्वामी 2 करोड़ रुपए के आसामी हैं।”

“राजेंद्र प्रसाद से साढ़े तीन करोड़ रुपए हजम कर चुके डॉ. स्वामी सिर्फ 2 करोड़ रुपए के आसामी!” जयंत बोला, “डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के सभी बैंक अकाउंट ट्रैक करो। उनके अकाउंट में मामूली-से लेन-देन की भी खबर मुझे मिले। दोनों हमारे हाथ से फिसलने नहीं चाहिए, राठौड़!”

“मेरी नजर उनके अकाउंट पर है।” राठौड़ मुस्कराते हुए बोला, “आप कहें तो उनके अकाउंट फ्रीज करवा दें। साँस रुकेगी तो अपने आप बिल से बाहर निकलेंगे!”

“उनके अकाउंट फ्रीज करने के लिए हमारे पास ठोस वजह नहीं है। उन्हें गलती करने दो और फिर झपट्टा मारो!”

राठौड़ ने मुस्कराते हुए जयंत की बात से सहमति जताई।

“रोहन के अकाउंट से निकले 60 लाख रुपए और उसके लॉकर से गायब प्रियंका के जेवरों की क्या कहानी है?”

“मैंने उस बैंक में लगे सभी कैमरों की 13 फरवरी, 2008 से लेकर 26 फरवरी तक की फुटेज की जाँच की। प्रियंका ठीक कह रही थी। 13 फरवरी को वह रोहन के साथ बैंक गई थी और दोनों ने अपना लॉकर इस्तेमाल किया था।”

“क्या लॉकर से जेवर और अकाउंट से 60 लाख रुपए 14 फरवरी को निकाले गए?” जयंत ने पूछा।

“बैंक के लॉकर रजिस्टर में रोहन और प्रियंका के सिग्नेचर के साथ एंट्री है। 14 फरवरी की निकासी पर्ची पर भी रोहन के सिग्नेचर हैं। पर सिग्नेचर के अलावा कोई पक्का सबूत नहीं कि वह 14 फरवरी को बैंक में था। उस पूरे दिन के फुटेज में रोहन कहीं दिखाई नहीं दिया। न बैंक के किसी काउंटर पर, न लॉकर रूम के भीतर।”

“हो सकता है कि उस दिन रोहन के फर्जी सिग्नेचर से किसी और ने उसके अकाउंट से रुपयों का लेन-देन किया हो। या फिर रोहन ने भेष बदल कर या किसी दूसरे के जरिए यह लेन-देन किया हो।” जयंत सोचते हुए बोला, “अगर निकासी और जमा पर्ची पर अकाउंट की जानकारी और वैध हस्ताक्षर हैं तो बैंक अकाउंट से पैसे निकालना या जमा करना आसान काम है।”

“रोहन के बैंक अकाउंट की जाँच के दौरान एक अजीब बात पकड़ में आई।” राठौड़ बोला, “उसके अकाउंट में पिछले छह महीनों से किसी न किसी तरीके से 60 लाख रुपए की रकम बरकरार रखी गई है। अकाउंट में निकाली हर रकम के साथ सिर्फ उतनी रकम जमा हुई जिससे अकाउंट में सिर्फ 60 लाख ही बचें।”

“पर आखिरकार पूरे 60 लाख रुपए निकाल लिए गए।” जयंत बोला, “अगर रोहन को अपने अकाउंट से सारे रुपए निकाल कर सिर्फ एक लाख रुपए ही छोड़ने थे, तो क्या फर्क पड़ता है कि अकाउंट में कितनी रकम थी।”

“मैं रोहन के बैंक अकाउंट से पिछले साल भर में हुए लेन-देन छान रहा हूँ। शायद उसके अकाउंट से 60 लाख रुपए निकाले जाने की गुत्थी का कोई सिरा हाथ लग जाए।” राठौड़ बोला।

“बैंक के सीसीटीवी फुटेज भी खँगालो। पता करो पिछले छह महीनों में रोहन कब-कब बैंक गया और उसका आना-जाना बैंक रिकॉर्ड से मेल खाता है या नहीं।” जयंत ने सुझाया।

“सर, एक और बात!” राठौड़ फाइलें समेटता हुआ बोला, “कूरियर कंपनी के रिकॉर्ड में 24 फरवरी को नई दिल्ली अंतर्राज्यीय बस अड्‌ डा ब्रांच से श्रीमंत जी के घर भेजे कूरियर के डिटेल्स मिले हैं।”

“कोई नई बात बताओ, राठौड़!” जयंत ने मुँह बिचकाया।

“इस कूरियर कंपनी का काम सिर्फ कुछ शहरों तक सीमित है। धंधा बिलकुल न के बराबर है। मुझे उसकी सर्विस भी कुछ भरोसेमंद नहीं लगी। वहाँ कूरियर की सारी जानकारियाँ एक मोटे रजिस्टर में दर्ज होती हैं।” राठौड़ बोला, “वसीयत जैसी महत्त्वपूर्ण चीज को भेजने के लिए ऐसी घटिया कंपनी का सहारा लेना मुझे जमा नहीं।”

“क्योंकि ऐसी छोटी कंपनियों की आड़ में टेढ़े काम करना आसान होता है।” जयंत सोचते हुए बोला, “कंपनी के मालिक को रगड़ो। उम्मीद तो नहीं है, पर शायद वह कुछ उगल दे।”

“मैं नेकी के कामों में हमेशा आगे रहता हूँ, सर!” राठौड़ अपने हाथ मलते हुए मुस्कराया।

“अपने कुछ विश्वसनीय आदमी श्रीमंत परिवार की चौबीस घंटे निगरानी में लगाओ। रोहन के फ्लैट पर भी नजर रखो। शायद किस्मत से रोहन की जिंदगी का कोई छिपा हिस्सा हमारी पकड़ में आ जाए।” जयंत बोला, “और ध्यान रहे! नथिंग इज ऑफिशियल!”

“क्या सर! मछलियों को तैरना सिखा रहे हैं!” राठौड़ मुस्कराया।

“सिखा नहीं रहा हूँ, बस याद दिला रहा हूँ!” जयंत ने उत्तर दिया।

“तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम पुलिसवाले अपने बाप पर भी भरोसा नहीं करते हैं।” राठौड़ बोला।

“खुलकर बोलो!”

“अगर इन घटनाओं के तार रोहन से जुड़ रहे हैं तो रोहन से जुड़े करीबी लोगों को अपने शक के बाहर रखना ठीक नहीं होगा, सर!” राठौड़ बोला, “रोहन ने अपने जीवन की कई खास बातें अपने परिवार से छुपाईं। उसे या तो अपने परिवार पर भरोसा नहीं था या उसे डर था कि इन बातों का उसके परिवार में से कोई गलत फायदा उठा सकता है।”

जयंत को राठौड़ की बात में वजन लगा। बिना जाँच के श्रीमंत परिवार को क्लीन चिट देना केस को भटका सकता था।

“तुम मामले की जड़ खोदो। उन जड़ों से कौन जुड़ा है उसकी चिंता मत करो!” जयंत बोला।

राठौड़ मुस्कराया और एक फौरी सैल्यूट मारकर कमरे से बाहर निकल गया।

राठौड़ के जाते ही जयंत गहरी साँस लेकर अपनी कुर्सी पर पसर गया। अपने पुराने और विश्वसनीय जोड़ीदार राठौड़ को रोहन के केस से जोड़कर उसने सही किया। डॉ. स्वामी और डॉ. महापात्रा के बारे में राठौड़ की जुटाई जानकारियों ने रोहन की वसीयत के मामले को नई दिशा में मोड़ दिया था। दो विशेषज्ञों के एक प्रतिष्ठित अस्पताल से इस्तीफे की वजह कोई मोटा ऑफर नहीं था तो उनके गायब होने का कारण जरूर कुछ खास रहा होगा।

साढ़े तीन करोड़ रुपए की रकम डकारने वाले डॉ. स्वामी के लिए नई नौकरी ढूँढ़ना जरूरी नहीं था। जरूरी था भी तो उसके लिए उन्हें अपना पता और मोबाइल नंबर छुपाने की कोई जरूरत नहीं थी। नौकरी छोड़ने के बाद उन्होंने अस्पताल के नियमों को ताक में रख निश्चल का ऑपरेशन क्यों किया? ऑपरेशन करने की बात उन्होंने क्यों दबाई? दोनों प्रियंका की प्रेगनेंसी में दिलचस्पी क्यों ले रहे थे? क्या ऑपरेशन की तारीख में हेरफेर, अस्पताल के रिकॉर्ड रूम में लगी आग और डॉ. स्वामी से डॉ. महापात्रा को मिली दस लाख रुपए की रकम किसी काले राज को दबाने की कोशिश है? सबसे बड़ा सवाल- इन घटनाओं के ताने-बाने रोहन की वसीयत से कैसे जुड़ रहे हैं?

वसीयत का ध्यान आते ही जयंत को खाली लॉकर और उसके भीतर मिला निशान याद आया। अपने मोबाइल फोन पर रोहन के लॉकर की तस्वीर खोलकर वह देखने लगा।

तस्वीर देखते हुए उसके दिमाग में कई सवाल उठ खड़े हुए। इस निशान को लॉकर के भीतर कब और किसने बनाया? इसका रोहन से और प्रियंका के गायब गहनों से कुछ संबंध है या फिर श्रीमंत परिवार हर छोटी-बड़ी बात को सिर्फ रोहन से जोड़कर देख रहा है?

उसने फोन घुमाकर उस निशान को विभिन्न कोणों से देखा। कुछ देर तस्वीर के साथ माथापच्ची करने के बाद उसने फोन बंद कर अपनी पेंट की जेब में डाला और फिर घड़ी देखी।

सुबह के 10:30 बज रहे थे। उसके पास समय था अपने खबरियों से मिलकर उन्हें रोहन के केस की जाँच से जोड़ने का।

कमरे से निकला तो सामने राठौड़ दिख गया।

“चलो! अपनी सल्तनत की सुध ले आएँ!” राठौड़ के कंधे पर धौल जमाते हुए जयंत बोला।

राठौड़ मुस्कराते हुए उसके साथ हो लिया। दोनों पार्किंग में खड़ी पुलिस जीप में बैठे। जयंत ने जीप चालू कर उसे रोड की तरफ मोड़ा ही था कि जीप में लगा वायरलेस सेट चिल्ला उठा-

“कंट्रोल रूम कॉलिंग इंस्पेक्टर जयंत! ओवर!”

“इंस्पेक्टर जयंत टू कंट्रोल रूम! ओवर!” जयंत माइक्रोफोन अपने मुँह से सटाकर बोला। संक्षिप्त बातचीत के बाद माइक्रोफोन रख उसने राठौड़ की तरफ एक फीकी मुस्कान फेंकी।

“यह ‘अंधा-मोड़’ आपकी कुंडली में राहु बना बैठा है, सर!” राठौड़ ने चुटकी ली।

जयंत ने कंधे उचकाए और गाड़ी रेलवे क्रॉसिंग की तरफ मोड़कर उसकी रफ्तार बढ़ा दी।

अंधा मोड़ (24 मार्च, 2009)

जयंत ने रोड के निकट गाड़ी रोकी। वहाँ से करीब 50 मीटर की दूरी पर रोड कटावदार मोड़ लेते हुए रेलवे क्रॉसिंग से जुड़ती थी। रोड के दोनों तरफ लगे पेड़ों की आड़ में अक्सर होते छोटे-मोटे एक्सीडेंट के कारण यह मोड़ 'अंधा-मोड़' के नाम से बदनाम था। जयंत की बदकिस्मती थी कि 'अंधा-मोड़' उसके प्रभार क्षेत्र में था और अक्सर होते एक्सीडेंट के कारण उसका यहाँ आना-जाना लगा रहता।

आज 'अंधा मोड़' आना जयंत को खासा अखर रहा था। एक्सीडेंट की खानापूर्ति में समय लगने का मतलब था कि वो अपने खबरियों से मिलकर रोहन के एक्सीडेंट की जाँच आगे नहीं बढ़ा सकता था।

एक्सीडेंट भयानक था। एक ट्रक और सफेद मारुति वैन आमने-सामने से टकराए थे। ट्रक को अधिक नुकसान नहीं हुआ था। उसका बंपर टूटकर झूल गया था और ड्राइवर केबिन का शीशा टुकड़ों में सड़क और वैन पर बिखरा पड़ा था।

एक्सीडेंट का सारा खामियाजा वैन ने भुगता था। खस्ताहाल वैन के भीतर शायद ही कुछ साबुत बचा था। उसकी पिचकी छत और दरवाजे के बीच टूटी सीट पर खून से लथपथ ड्राइवर फँसा था। उसका चेहरा गाढ़े खून से सना था। टूटे स्टीयरिंग का एक हिस्सा टेढ़ा होकर उसके सीने में धँसते हुए सीट से पार हो गया था। बदन काँच के टुकड़ों से छलनी था। दाहिना हाथ टेढ़ा हुआ कंधे से झूल रहा था। फटे माथे से खून से सने भेजे का हिस्सा झाँक रहा था। हर तरफ उसका खून छितराया था।

दमकलकर्मी वैन की छत और दरवाजे को आरी-मशीन से काटकर ड्राइवर की लाश को बाहर निकालने की कोशिश में जुटे थे। उनके बीच जगह बनाते हुए पुलिस का फोटोग्राफर एक्सीडेंट की फोटो खींचने में व्यस्त था।

जयंत का मुँह कसैला हो गया। ड्राइवर की खून सनी लाश पर एक सरसरी नजर डालकर उसने अपनी टोपी सिर से उतारकर हाथ में पकड़ी और वायरलेस सेट पर कंट्रोल रूम को घटना की पूरी जानकारी दी।

ढाई घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद दमकलकर्मी वैन की छत काटकर ड्राइवर की लाश बाहर निकाल पाए। स्ट्रेचर पर लादकर उन्होंने लाश को एंबुलेंस में रखा।

“सर!” कागजी खानापूर्ति करते राठौड़ ने चीखते हुए जयंत को अपने पास बुलाया।

जयंत राठौड़ के पास पहुँचा। देखा राठौड़ के चेहरे पर बारह बजे रहे थे। आँखें फाड़े लाश को घूरते हुए वो ऐसे खड़ा था, मानो कोई अजूबा देख रहा हो।

लाश के चेहरे पर नजर पड़ते ही जयंत भी चौंक गया। उसे राठौड़ की हालत की वजह समझ आई। पहले लगा कि उसकी आँखें धोखा खा रही हों। फिर लगा शायद वह लाश पहचानने में गलती कर रहा हो। उसने लाश के चेहरे को गौर से देखा। देखने के साथ लाश के चेहरे को गहराई से टटोला। एक बार नहीं, कई बार। जितनी देर चेहरा देखता गया उतनी देर उसकी आँखें आश्चर्य से फटी रहीं।

दिमागी उठापटक में जयंत ने बड़ी मुश्किल से अपने गले में थूक गटका। कलमों से पसीना चूते हुए गालों पर सरक आया।

“राठौड़! वैन में ढूँढ़ो, शायद ड्राइवर की शिनाख्त के लिए कुछ मिले।” जयंत होश में लौटा, “इस वैन और इसके ड्राइवर की पूरी जानकारी निकालो। पता करो कि पुलिस कंट्रोल-रूम में किसने एक्सीडेंट की जानकारी दी थी।”

“जी सर!” राठौड़ अपने माथे का पसीना पोंछते हुए तुरंत दुर्घटनाग्रस्त वैन की तरफ भागा।

लाश को एंबुलेंस में अस्पताल भेज जयंत अपनी जीप में लौटा। रुमाल से पसीना पोंछकर उसने गहरी साँसें लीं। दिल की धड़कनें तेज होकर कानों को सुनाई दे रही थीं।

थोड़ा नॉर्मल हुआ तो अपने मोबाइल से उसने श्रीमंत जी का नंबर डायल किया।

“अंकल, जयंत हियर! रेलवे क्रॉसिंग के पास एक वैन का एक्सीडेंट हुआ है। आपको ड्राइवर की लाश की शिनाख्त के लिए सिटी अस्पताल आना है।” जयंत ने श्रीमंत जी को कुछ बोलने का अवसर नहीं दिया, “बाकी बातें मिलने पर होंगी।”

थकान और मानसिक खींचातानी से जयंत का सिर घूमने लगा। लाश का चेहरा दिमाग में ऐसा घुसा था कि निकलने का नाम नहीं ले रहा था।

उसने तुरंत अपने फोन पर एक और नंबर डायल किया।

“बड़े दिनों बाद याद आई!” फोन के दूसरी तरफ से तंज भरी एक पुरुष आवाज आई, “इस बार क्या रायता फैलाया है?”

“डॉ. मजूमदार! तुरंत सिटी अस्पताल पहुँचिए।” कहकर जयंत ने डॉ. मजूमदार को संक्षेप में एक्सीडेंट की जानकारी दी।

डॉ. मजूमदार से बात करके भी जयंत बेचैन रहा। श्रीमंत जी को सिटी अस्पताल बुलाने के निर्णय पर उसका दिल उसे कचोटने लगा। ये जानते हुए भी कि रोहन की मौत और वसीयत से जुड़ी घटनाओं के बोझ से दबे श्रीमंत जी के लिए लाश की शिनाख्त करना तकलीफदेह होगा, वो उन्होंने बुलाने से खुद को रोक नहीं पाया।

अब वो खुद में उलझा खड़ा था। उसका मन एक तरफ लाश की शिनाख्त से गलतफहमियाँ दूर होने का ढाढ़स बँधा रहा था, तो दूसरी तरफ श्रीमंत परिवार पर शुरू होने वाली नई मुसीबतों की आहट सुनाकर उसे डरा रहा था।

जयंत ने अपना सिर झटका। अच्छा हुआ जो उसने यहाँ आने में देर नहीं की। उसने डॉ. मजूमदार और श्रीमंत जी को अस्पताल बुलाकर भी ठीक किया। सिटी अस्पताल में लाश की पुख्ता शिनाख्त के बाद दूध का दूध और पानी का पानी होने वाला था।

फिर लगा कि अपनी पीठ थपथपाकर वह खुद को ही बेवकूफ बना रहा था। उसने यहाँ आकर कोई भारी तोप नहीं चलाई थी। असली तोप तो लाश की शिनाख्त के बाद चलने वाली थी।

शिनाख्त (24 मार्च, 2009)

प्रियंका, विराट और श्रीमंत जी घबराए हुए सिटी अस्पताल के रिसेप्शन हॉल में पहुँचे। फोन पर एक्सीडेंट और लाश की शिनाख्त की बात सुनकर सभी के मन में अनेक बुरे खयाल भरे थे। बैठे-ठाले जाने कौन-सी नई मुसीबत गले आन पड़ी।

जयंत रिसेप्शन हॉल में उनके इंतजार में खड़ा था।

"जयंत! क्या हुआ? तुम फोन पर किस एक्सीडेंट और लाश की शिनाख्त की बात कर रहे थे?" श्रीमंत जी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

जयंत कुछ नहीं बोला। बस उन्हें अपने पीछे आने का इशारा कर तेज कदमों से हॉल से सटे गलियारे की तरफ बढ़ गया।

श्रीमंत जी सकपकाए। डर के मारे उनका दिल बैठ रहा था। हर धड़कन के साथ डर और घबराहट बढ़ रही थी। उस पर जयंत की चुप्पी उनके डर को शांत करने के स्थान पर उसे भड़काने का काम अधिक कर रही थी।

अस्पताल के कई कॉरिडोर नापने के बाद जयंत रुका। सामने दीवार पर बड़े-बड़े लाल अक्षरों में लिखा हुआ था- शवगृह-3 ! उसके निकट मोटा ताला जड़ा लोहे का दरवाजा था। दरवाजे के आगे लगा लोहे का शटर खुला पड़ा था। दरवाजे से सटी एलुमिनियम की टेबल पर पानी भरी प्लास्टिक की बड़ी बोतल के साथ एक पुराना मोटा रजिस्टर पन्नों में बालपेन दबाए पड़ा था।

टेबल से सटी प्लास्टिक की घिसी-पिटी कुर्सी पर शवगृह का वार्डन टेबल पर पैर पसारे औंधा पड़ा था। उसके बोझिल चेहरे और अलसाई आँखों से समझ नहीं आ रहा था कि वो सो रहा है या जाग रहा है। सब-इंस्पेक्टर राठौड़ एक हवलदार के साथ शवगृह के सामने टहल रहा था।

"राठौड़! डॉ. मजूमदार शाम 7 बजे लाश को पोस्टमार्टम के लिए ले जाएँगे।" जयंत ने राठौड़ को बताया।

"ओके सर!" राठौड़ बोला, "यहाँ का पेपर वर्क भी पूरा हो गया है।"

"जयंत! कुछ बताओगे आखिर माजरा क्या है?" श्रीमंत जी के सब्र का पैमाना छलक रहा था।

“आप खुद देखें तो बेहतर होगा।” जयंत ने बुझा-सा संक्षिप्त उत्तर दिया।

श्रीमंत जी सकपका कर चुप रह गए।

जयंत ने अपना डंडा टेबल पर जोर से मारा। वार्डन हड़बड़ाते हुए उठा। सामने खड़े जयंत की पुलिस वर्दी देख उसका आलस पलक झपकते ही जाता रहा।

“के-21 ” जयंत कड़क आवाज से बोला।

वार्डन ने उबासी लेते हुए सुस्त हाथों से मेज पर रखे रजिस्टर से ताजा तारीख वाला पन्ना खोलकर उसे जयंत के सामने सरकाया। जयंत ने उस पर लॉकर नंबर और अपना नाम लिखकर दस्तखत किए।

वार्डन ने शवगृह के दरवाजे का ताला खोलकर दरवाजे को धक्का मारकर खोला।

वार्डन और जयंत के साथ श्रीमंत जी शवगृह में दाखिल हुए। दवाइयों की तीखी गंध के साथ बल्बों की बोझिल रोशनी ने शवगृह के माहौल को मुर्दनी जैसा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। शवगृह की ठंडी बासी हवा में घुली दवाइयों की गंध से बचने के लिए उन्होंने अपने नाक और मुँह को हाथों से ढँका।

कमरे में दीवार से सटे लोहे के कई बड़े-बड़े शेल्फ रखे थे, जिनके दरवाजों पर काले पेंट से बड़े-बड़े अक्षरों में नंबर पुते थे। वार्डन ने ‘के-21 ’ शेल्फ पर लगे हेंडल को खींचकर खोला। धातु रगड़ने की कर्कश आवाज के साथ शेल्फ खुला और उसके भीतर भरी ठंडी हवा सफेद प्लास्टिक कवर में ढँकी लाश का साथ छोड़ते हुए शवगृह में छितराने लगी। लाश पर चढ़े प्लास्टिक कवर की जिप खोलकर वार्डन पीछे हट गया।

श्रीमंत जी की धड़कनें इतनी बढ़ गईं कि लगा जैसे दिल छाती फाड़कर बाहर आ गिरेगा। घर की शांति और सुकून से विपरीत लाशों से भरे शवगृह के भीतर हड्डियों को जमा देने वाली ठंडक और मुर्दनी से उनके रोंगटे पहले ही खड़े थे, उस पर लाश की शिनाख्त की बात सोचते हुए उनकी घिग्घी बँध रही थी।

डरते-डरते उन्होंने शेल्फ में रखी लाश को देखा।

भय की तेज झुरझुरी श्रीमंत जी के दिमाग से उठकर उनके शरीर को झकझोरते हुए जमीन में समा गई। आँखें लाश को देखते हुए अविश्वास से

फैलते हुए पथरा गईं। लगा जैसे कमरे में ठंडक यकायक कई गुना बढ़ गई हो। इतनी कि उस ठंड में उनका दिमाग और साँस जमने लगी। दिल की धड़कनें इतनी तेज हो गईं कि लगा कि उनके शोर से कानों के पर्दे अब फटे कि तब।

शेल्फ से निकल रही धुंध में शवगृह में लगे बल्बों की रोशनी मंद पड़ते हुए इतनी धूमिल हो गई कि लगा जैसे कमरे में रोशनी ही नहीं बची हो। शेल्फ से निकली ठंडी हवा ने पूरे शवगृह को अपनी चपेट में ले लिया। श्रीमंत जी की हड्डियाँ उस ठंड में काँप उठीं। फिर लगा जैसे अँधेरे में घिरा शवगृह चकरघिन्नी की तरह घूमने लगा हो। इससे पहले श्रीमंत जी कुछ समझ पाते, वह लहराते हुए तेज आवाज के साथ फर्श पर गिरे।

“राठौड़! डॉक्टर!” जयंत गला फाड़कर चीखा। उसने झुककर श्रीमंत जी की गर्दन को उठाकर अपनी गोद में रखा और घबराया हुआ उनके हाथों को मलने लगा।

राठौड़ भागते हुए शवगृह के भीतर आया और हालात भाँपते ही उलटे पैर बाहर भागा। थोड़ी देर में वो अपने साथ कुछ वार्डकर्मियों को लेकर लौटा। सभी ने श्रीमंत जी को सहारा देकर शवगृह से बाहर निकाला और वार्डन की कुर्सी पर बैठाया। विराट और प्रियंका ने वार्डन की टेबल पर रखी प्लास्टिक की बोतल से पानी निकालकर पानी के छींटे श्रीमंत जी के चेहरे पर मारे।

कुछ देर बाद श्रीमंत जी को होश आया। आँखें खुलीं, पर चेहरा डर से मुरझाया रहा। प्रियंका के हाथ से थोड़ा पानी पीकर उनकी जान में जान आई।

“यह क्या भद्दा मजाक है, जयंत!” श्रीमंत जी ने थरथराई आवाज से पूछा। फूलती साँसों के कारण वह अधिक नहीं बोल पाए, पर शब्दों की कमी आँसुओं ने पूरी की।

सवालों में खुद उलझा जयंत उन्हें क्या जवाब देता। बिना कुछ बोले श्रीमंत जी ने उसे वो सब बता दिया था जो उसे जानना था। उनकी हालत ने उसकी कई आशंकाओं को सच साबित कर दिया था। कोई शक नहीं बचा था कि शवगृह के ‘के-21 ’ शेल्फ में एक लाश नहीं, बल्कि तूफान लेटा था जो श्रीमंत परिवार पर कहर बनकर टूटा था।

विराट और प्रियंका हक्के-बक्के खड़े श्रीमंत जी की हालत की वजह समझने की कोशिश कर रहे थे। जयंत और श्रीमंत जी की बातचीत उनकी

समझ से बाहर थी, पर श्रीमंत जी की हालत और जयंत का उतरा चेहरा देख यकायक दोनों की दिलचस्पी ‘के-21 ’ शेल्फ में रखी लाश में बढ़ गई।

दोनों ने आपस में इशारा किया और शवगृह के भीतर जाकर खुले हुए ‘के-21 ’ शेल्फ के भीतर रखी लाश को एक नजर देखा।

आँखों देखी पर दोनों को यकीन नहीं हुआ। जिस पर यकीन नहीं हुआ, उसे देखकर यकीन करने की कोशिश की, पर सफल नहीं हुए। लाश को एक नजर देखने के बाद उनकी नजरें जैसे लाश से चिपक गईं। जैसे-तैसे लाश से नजर हटाई तो उसे दोबारा देखने की हिम्मत नहीं जुटा सके। शवगृह के हड्डियों को कँपाने वाले तापमान में भी वे पसीने से भीग गए। दोनों शवगृह से ऐसे भागते हुए निकले मानो पीछे भूत पड़ा हो।

श्रीमंत जी की हालत की वजह जानने के लिए उन्हें अब जयंत और श्रीमंत जी दोनों से कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं थी। ‘के-21 ’ शेल्फ में रखी लाश उन्हें श्रीमंत जी की हालत की वजह समझाने के साथ खुद उनके दिलो-दिमाग पर हावी हो गई थी।

“जयंत, ये सब...” डर के मारे विराट का गला ऐसा सूखा कि चाहते हुए भी उससे कुछ बोलते नहीं बना।

जयंत ने सभी को ‘अंधे-मोड़’ के पास हुए एक्सीडेंट और एक्सीडेंट में मारे गए ड्राइवर के बारे में बताया।

“लाश की शिनाख्त कर आपने मेरा रहा-सहा शक भी खत्म कर दिया है।” जयंत बुझे स्वर में बोला, “तो मैं ठीक समझ रहा हूँ कि यह लाश वाकई...” कहते-कहते उसने ठिठककर सभी के डरे-सहमे चेहरों पर नजर घुमाई, “...रोहन की है!”

डरे-सहमे विराट, प्रियंका और श्रीमंत जी ने एक-दूसरे को इस उम्मीद से घूरा कि शायद कोई जयंत की बात काटेगा। लेकिन फिर तीनों एक सहमी हुई हामी भरकर रह गए।

“कुछ तो बोलिए!” जयंत दबी-सहमी आवाज में बोला। हालाँकि उसे पता था कि लाश की हकीकत ने किसी के पास बोलने को कुछ नहीं छोड़ा था।

“लाश के नाक-नक्श, डील-डौल और रूप-रंग हूबहू रोहन जैसा है!” श्रीमंत जी घबराए हुए बोले। हर शब्द डर और असमंजस में घुला था, “पर यह भी सच है कि हम सभी ने 26 फरवरी को रोहन की लाश देखी थी।

मैंने अपने हाथों से 27 फरवरी को उसकी चिता को आग दी है। अपने रोहन की लाश पहचानने में हम इतनी बड़ी गलती कैसे कर सकते हैं?”

“सच तो एक ही हो सकता है। 26 फरवरी को मिली लाश और इस लाश में से सिर्फ एक लाश असली हो सकती है।” जयंत गंभीरता से बोला, “हकीकत जानने के लिए आपके और लाश के डीएनए की जाँच करनी होगी।”

“मुझे क्या करना है?” घबराए हुए श्रीमंत जी पूछ बैठे।

“आप तुरंत डॉ. मजूमदार की फॉरेंसिक लेबोरेट्री में अपना डीएनए टेस्ट करवा लें।” जयंत ने अपनी जेब से एक विजिटिंग कार्ड निकालकर श्रीमंत जी को दिया, “डीएनए टेस्ट रिपोर्ट आने के बाद हम अगले कदम के बारे में सोचेंगे।”

“मुझे कोई ऐतराज नहीं है!” श्रीमंत जी ने जयंत के प्रस्ताव से तुरंत सहमति जताई, “पर अगर डीएनए टेस्ट से मेरा और लाश का संबंध साबित नहीं हुआ तो?”

“हमारी मुश्किलें कम नहीं होंगी!” जयंत के माथे पर पड़े बल गहरा गए, “पता लगाना होगा कि लाश किसकी है और ये रोहन से कैसे मिलती है।”

श्रीमंत जी ने बड़ी कठिनाई से अपने सूखे गले में थूक गटका। जयंत की बातों में उन्हें आने वाले बुरे वक्त की चेतावनी सुनाई दे रही थी।

“आप लोग घर चलिए।” जयंत बुझे स्वर में बोला, “रोहन और इस एक्सीडेंट के बारे में आप लोग कोई जानकारी देना चाहें तो मुझे इत्तला कर दें। लाश की शिनाख्त पूरी होने तक आप लोग शहर में रहें तो बेहतर होगा।”

सभी पर डर इतना हावी था कि जयंत का सुझाव मानने में ही उन्हें भला लगा।

तजुर्बेकार (27 मार्च, 2009)

डॉ. प्रतीक मजूमदार, फॉरेंसिक एक्सपर्ट!

कमरे के दरवाजे पर टँगी उस वर्षों पुरानी नेमप्लेट पर एक सरसरी नजर डालते हुए जयंत भीतर दाखिल हुआ। नेमप्लेट में ठुकी कीलें जंग से जूझती हुई अपनी अंतिम साँसें गिन रही थीं। उस पर लिखे अक्षर बदरंग हो गए थे, पर जयंत के लाख कहने पर भी मजाल है कि डॉ. मजूमदार ने उस पुरानी नेमप्लेट को बदलने में कोई दिलचस्पी दिखाई हो।

कमरे में कदम रखते ही केमिकृस की जानी-पहचानी गंध ने जयंत का स्वागत किया। वर्षों से यहाँ आते-जाते जयंत का कमरे की सभी चीजों और वहाँ फैली अजीब गंध से गहरा याराना हो गया था। आँख पर पट्टी बाँधकर भी वह कमरे में रखी सभी चीजों को पहचान सकता था।

इतने वर्षों में डॉ. मजूमदार की बढ़ती उम्र और उनके बालों के काले से सफेद होने के अलावा वहाँ कुछ नहीं बदला था। वही पुराना नाम का फर्नीचर- एक लोहे की अलमारी, लकड़ी की टेबल जिस पर कंप्यूटर के साथ हमेशा की तरह आज भी कागज और फाइलें बिखरी थीं, टेबल के साथ रखी काले लेदर की वर्षों पुरानी रेवॉल्विंग चेयर जिसकी गद्दी वर्षों से अपने ऊपर डॉ. मजूमदार का वजन ईमानदारी से ढोते हुए अपने रिटायरमेंट की उम्मीद छोड़ चुकी थी और कमरे की छत पर टँगा वह वर्षों पुराना पंखा जो डॉ. मजूमदार के कॅरियर की शुरुआत से उनका साथ निभा रहा था।

आज डॉ. मजूमदार के कमरे में एक नया मेहमान था- स्ट्रेचर पर सफेद कपड़े से ढँकी, अंधे-मोड़ पर हुए एक्सीडेंट में मारे गए रोहन के हमशक्ल ड्राइवर की लाश!

40-45 वर्षीय डॉ. मजूमदार हमेशा की तरह अपने पाँच फुटिया भारी- भरकम, गोल-मटोल और थुलथुल शरीर का बोझ रेवॉल्विंग कुर्सी पर डाले बैठे थे। उनकी छोटी-छोटी भूरी आँखें टेबल पर रखे कंप्यूटर की स्क्रीन पर गड़ी थीं। चेहरे पर छितराई हल्की गुलाबी छटा उनके स्वास्थ्य की घोषणा कर रही थी। भरे-फूले गाल पतले होठों को सहलाते हुए नीचे झूल रहे थे। सिर पर घुँघराले बालों की सफेदी में चुपके से साँस लेती कालिमा दुबकी थी। ट्यूबलाइट की दूधिया रोशनी में उनका सपाट माथा चमक रहा था।

“फुरसत मिल गई, जानेमन!” डॉ. मजूमदार की आवाज कमरे में गूँजी।

“दो आँखें सिर के पीछे भी लगा रखी हैं क्या?” जयंत ने चुटकी ली।

“तुम्हारे घटिया परफ्यूम की महक से मीलों दूर कब्र में दफन मुर्दे बेचैन होकर भाग जाएँ। मैं तो फिर भी जिंदा इंसान हूँ!” कहते हुए डॉ. मजूमदार ने चेयर जयंत की तरफ घुमाई, “थोड़ा और पैसा खर्च कर कोई अच्छा परफ्यूम खरीद लो। अच्छा-खासा पैसा देती है तुम्हें सरकार। फिर कंजूसी कैसी?”

जयंत खिसियाकर रह गया। डॉ. मजूमदार से उसे अपनी इस तरह बेइज्जती की उम्मीद नहीं थी, पर वो डॉ. मजूमदार क्या जो दूसरों की उम्मीद के मुताबिक चलने लगें और वो जयंत क्या जो वर्षों से डॉ. मजूमदार को जानते हुए भी उनके मजाक का बुरा मान जाए।

“कैसे याद फरमाया?” उसने बात का रुख मोड़ा।

“24 मार्च वाला मामला क्या है?”

“24 मार्च सुबह 10:30 बजे के करीब ‘अंधे मोड़’ के पास वैन और ट्रक की टक्कर हुई थी। वैन के ड्राइवर की लाश आपको जाँच के लिए शाम को भेजी गई।”

“क्या एक्सीडेंट के बाद ड्राइवर जिंदा था?”

“वैन से बाहर निकालने से पहले वह दम तोड़ चुका था। मौत का समय सुबह के ग्यारह-सवा ग्यारह के आसपास था।”

“एक्सीडेंट के बाद उसका क्या हाल था?”

“लहूलुहान था। बदन पर काँच के टुकड़ों की वजह से कई गहरे जख्म थे। बदन से मांस कई जगहों से उधड़ गया था। दाएँ हाथ की हड्डी टूट गई थी। हाथ टेढ़ा होकर कंधे से झूल रहा था। लाश वैन की छत काटकर बाहर निकाली गई।”

“इंटरेस्टिंग! वेरी इंटरेस्टिंग! तो तुम्हें यकीन है कि ड्राइवर के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी।”

“शायद आपने सुना नहीं। मैंने कहा कि वैन से बाहर निकालने से पहले उसकी मौत हो चुकी थी। दुर्घटनास्थल पर मौजूद डॉक्टर ने पूरी जाँच के बाद उसकी मौत की पुष्टि की थी।”

“वैन से निकालने के बाद लाश अंदाजन कितनी देर बाद शवगृह पहुँची?”

“दोपहर करीब ढाई बजे!”

“अगर मैं कहूँ कि इस लाश पर एक मामूली खरोंच भी नहीं है, तो?” डॉ. मजूमदार ने अपनी थकी आँखों को हथेली से सहलाते हुए पूछा।

“आप शवगृह से गलत लाश तो नहीं उठा लाए?” जयंत ने अपनी आँखें तरेरीं।

“ऐसा है तो सबसे पहले अपने पुराने जोड़ीदार सब-इंस्पेक्टर राठौड़ को लात मारो। लाश को शवगृह से यहाँ तक लाने की जिम्मेदारी उसकी थी।” डॉ. मजूमदार तपाक से बोले। अगले ही पल वह संजीदा हुए, “पर सवाल लाश के सही या गलत होने का नहीं है।”

“मुझे पूरा यकीन है कि राठौड़ ने सही लाश आपके सुपुर्द की होगी!” जयंत सकपकाते हुए बोला, “माजरा क्या है?”

जवाब में डॉ. मजूमदार ने अपने हाथों पर रबर के दस्ताने चढ़ाए। कुर्सी से उठकर वह कमरे में रखे स्ट्रेचर के पास पहुँचे, “दिल थाम लो! कहीं बगावत कर भाग न जाए!” कहकर उन्होंने एक झटके से स्ट्रेचर पर रखी लाश पर ढँका सफेद कपड़ा उतार फेंका।

लाश देख जयंत ठगा रह गया। उसने कई बार अपना सिर झटककर लाश को देखा, पर उसकी हैरानी बढ़ती गई। स्ट्रेचर पर पड़ी तीन दिन पहले अंधे-मोड़ पर मिली रोहन की हमशक्ल लाश को पहचानना जितना आसान था, लाश की वास्तविकता से सहमत होना उतना ही कठिन था।

आँखें फाड़े वह स्ट्रेचर के चारों तरफ टहलते हुए लाश को देखने लगा।

स्ट्रेचर पर रखी रोहन की हमशक्ल लाश में 24 मार्च से अब तक जमीन- आसमान का फर्क था। फर्क भी ऐसा जो अच्छे-अच्छों के होश फाख्ता कर दे। लाश का न माथा फटा था और न उसके सिर पर सूजन थी। उसके नंगे बदन पर एक मामूली खरोंच भी नहीं थी। उलटे उसके चेहरे की गुलाबियत ऐसे उभर रही थी जैसे लाश नहीं जीवित रोहन स्ट्रेचर पर लेटा सो रहा हो।

जयंत बुरी तरह चकराया। ‘अंधे-मोड़’ पर खून से लहूलुहान ड्राइवर की लाश की छवि उसके दिमाग में तैर गई। जख्मों से लहूलुहान ड्राइवर की वो लाश एक हकीकत थी, उसके दिमाग का कोई फितूर नहीं। उस लाश

की दूसरी हकीकत उसके सामने स्ट्रेचर पर पड़ी थी जो न उससे स्वीकारते बन रही थी और न नकारते। लाश देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह 'अंधे मोड़' से मिली ड्राइवर की लहूलुहान लाश है।

पूरा माजरा साफ और जयंत की आँखों के सामने था, पर फिर भी उसकी समझ से कोसों परे था।

"ऐसा कैसे हो सकता है?" जयंत के सूखे गले से बमुश्किल शब्द निकले। उसका दिमाग उलझ गया, "मैंने दुर्घटनास्थल पर लाश का मुआयना किया था। मेरे अलावा डॉक्टर, नर्स और अस्पताल के कर्मचारी भी ड्राइवर की मौत के गवाह हैं। पुलिस के फोटोग्राफर के कैमरे में लाश की कई तस्वीरें कैद हैं। लाश को शवगृह में रखने से पहले अस्पताल के डॉक्टरों ने उसकी जाँच की थी। ये सारी जानकारियाँ एफआईआर में दर्ज हैं। इतने लोग एक साथ इतनी बड़ी गलती कैसे कर सकते हैं?"

"हकीकत तुम्हारे सामने है। मेरा दावा है कि ड्राइवर की मौत का कारण एक्सीडेंट नहीं है।" डॉ. मजूमदार बोले।

"साबित कर सकते हैं?" जयंत बोला।

"साबित करने का माद्दा नहीं होता तो तुम्हें यहाँ आने की तकलीफ नहीं देता!" डॉ. मजूमदार के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान लहराई, "24 मार्च को सुबह ग्यारह-सवा ग्यारह बजे के बीच ड्राइवर की मौत हुई और दोपहर के करीब ढाई बजे लाश शवगृह पहुँची। मैंने लाश की प्रारंभिक जाँच शाम 7-7:30 के आसपास शुरू की। इसके बाद लाश को शवगृह से मेरी लेबोरेट्री लाने में करीब एक घंटे का समय लगा। कुल मिलाकर मौत के 9-9:30 घंटे के बाद यह मेरी लेबोरेट्री में पहुँची।"

"मुद्दे पर आएँ।" जयंत बेसब्री से बोला।

"मौत के बाद शरीर अपनी गर्मी खोते हुए ठंडा पड़ने लगता है। इस प्रक्रिया को मेडिकल टर्म में 'अलगोर मोर्तिस' कहते हैं। 'अलगोर मोर्तिस' के कारण सामान्य मौत की स्थिति में तीन से छह घंटे के भीतर शरीर की मांस कोशिकाएँ सिकुड़ने लगती हैं। कोशिकाओं में सिकुड़न से शरीर के अंग अकड़ने लगते हैं। दिल बंद होने के कारण खून की कमी से शरीर नीला पड़ने लगता है। एक लाश आमतौर पर मौत के सात-आठ घंटों के बाद सड़ने लगती है।"

"इतना तो मैं भी समझता हूँ।" जयंत मुँह बिचकाते हुए बोला।

“समझदार हो बताओ कि क्या पाँच घंटे फ्रीजर में रखी लाश का तापमान किसी सामान्य व्यक्ति के तापमान के बराबर हो सकता है?”

“बेशक नहीं!”

“24 मार्च को मेरी प्राथमिक जाँच में लाश का तापमान सामान्य जीवित व्यक्ति के तापमान से मात्र कुछ डिग्री कम निकला था। उसके बाद से लाश पिछले तीन दिनों से यहाँ सामान्य तापमान में रखी है। इस दौरान उसके तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव लगा रहा, पर हैरानी की बात है कि तीन दिन पुरानी यह लाश ‘अलगोर मोर्तिस’ की सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया से सुरक्षित रही। इसमें सड़न या अकड़न का कोई चिह्न नहीं है।”

“क्या यह किसी ड्रग का असर है?”

“मुझे भी यह अंदेशा हुआ था।” डॉ. मजूमदार बोले, “पर शरीर में किसी ड्रग के अंश नहीं हैं।”

“क्या दुर्घटनास्थल पर डॉक्टरों ने ड्राइवर को मृत घोषित करने में जल्दबाजी की? बदन गर्म है तो व्यक्ति में जीवन की उम्मीद है। सही कहा मैंने?”

“यह लाश जीवन के कई सामान्य नियमों से परे है।” डॉ. मजूमदार बोले।

“मतलब?”

“मस्तिष्क में खून और ऑक्सीजन की कमी से मस्तिष्क-तंतु काम करना बंद कर देते हैं। इस कमी के कई कारण हो सकते हैं। जैसे हार्ट अटैक, फेफड़ों की बीमारी, पानी में डूबना, नशीले पदार्थ का सेवन, मस्तिष्क में खून की पूर्ति करने वाली धमनी में थक्का जमना, मस्तिष्क के भीतर खून का रिसना, लो ब्लड प्रेशर या फिर सिर पर लगी कोई गंभीर चोट।”

डॉ. मजूमदार की बात का मर्म समझते हुए जयंत ने सिर हिलाया।

“सिर पर गंभीर चोट लगने पर कई बार मस्तिष्क सूज जाता है। मानव खोपड़ी की सख्त और कठोर सतह सूजे मस्तिष्क को फैलने से रोकती है। नतीजतन मस्तिष्क की कोशिकाएँ खोपड़ी से रगड़ कर नष्ट होने लगती हैं। कोशिकाओं के अधिक नुकसान से मस्तिष्क हमेशा के लिए निष्क्रिय भी हो सकता है। मस्तिष्क निष्क्रिय होने पर भी कई बार शरीर के बाकी अंग काम करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को ‘ब्रेन-डेड’ करार दिया जाता है।”

“क्या यह ‘कोमा’ जैसा हुआ?” जयंत ने पूछा।

“दोनों में थोड़ा फर्क है। कोमा में गए व्यक्ति का मस्तिष्क किसी बाहरी क्रिया पर रिएक्ट करता है, पर ‘ब्रेन-डेड’ व्यक्तियों के दिमाग में कोई रिएक्शन नहीं होता है।” डॉ. मजूमदार ने उत्तर दिया, “कोमा में गए व्यक्ति के होश में लौटने की उम्मीद रहती है, लेकिन ‘ब्रेन-डेड’ व्यक्ति को मृत मान लिया जाता है।”

“क्या ‘ब्रेन-डेड’ व्यक्तियों के दुबारा जीवित होने की कोई उम्मीद नहीं होती?”

“मेडिकल साइंस में ऐसे चमत्कार होते रहे हैं। मेरी जानकारी में ऐसे कई विरले केस हैं, जिसमें ‘ब्रेन-डेड’ व्यक्ति कुछ हफ्तों या महीनों के बाद ठीक हो गया। कई केसों में ‘ब्रेन-डेड’ व्यक्तियों के महत्त्वपूर्ण अंगों को लंबे समय के लिए मशीन के सहारे जीवित भी रखा गया।” डॉ. मजूमदार ने बताया, “लेकिन यहाँ मामला कुछ और है।”

“वह कैसे?”

“यह लाश की पिछले तीन दिनों की ब्लड-प्रेशर और दिल की गतिविधि की रिपोर्ट है।” डॉ. मजूमदार ने टेबल पर रखे कुछ कागज उठाकर जयंत के हाथों में थमाए, “जाँच से पता चला कि लाश का दिल बंद है।”

“आपके हिसाब से लाश का दिल ‘बंद’ नहीं तो कैसा होना चाहिए?” जयंत चकराया।

डॉ. मजूमदार ने जयंत के मजाकिया लहजे को भाँपते हुए उसे घूरा। फिर उन्होंने अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर उभरी एक मानव-मस्तिष्क की तस्वीर की तरफ संकेत किया।

“यह कुछ साल पहले एक्सीडेंट में मारी गई महिला के सिर की सीटी स्कैन रिपोर्ट है। यह रिपोर्ट उसके मस्तिष्क की अंदरूनी चोटें दिखा रही है।” डॉ. मजूमदार ने तस्वीर में दिख रहे मस्तिष्क के एक हिस्से पर पेंसिल घुमाई, “यह गहरे रंग की संरचना मस्तिष्क में आई सूजन दर्शा रही है।” फिर उनकी पेंसिल घूमते हुए मस्तिष्क के दूसरे हिस्से पर थमी, “यह चमकीली रेखा मस्तिष्क में रक्तस्राव या हेमरेज दर्शाती है। साथ में दिख रही ये आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ चोट की वजह से खोपड़ी पर पड़ी दरारें हैं। सिर पर चोट लगने की वजह से इस महिला की खोपड़ी में दरार आई जो ब्रेन-हेमरेज और अंततः उसकी मृत्यु का कारण बना।”

“अब मामला कुछ समझ में आया!” जयंत बुदबुदाया।

“मिस्टर समझदार! आपकी समझ का टेस्ट अभी बाकी है।” डॉ. मजूमदार ने अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर दूसरी तस्वीर खोली, “जरा इस सीटी-स्कैन रिपोर्ट को देखो!”

जयंत ने उस तस्वीर को गौर से देखा। तस्वीर में न कोई चमकदार रेखा थी न कोई आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ।

“रिपोर्ट के हिसाब से सिर में न कोई दरार है, न इसके मस्तिष्क में रक्तस्राव या हेमरेज है।” जयंत बोला।

“देखा! यह समझना इतना भी मुश्किल नहीं था, इंस्पेक्टर जयंत!” डॉ. मजूमदार ने जयंत को घूरते हुए कटाक्ष किया।

जयंत उन्हें देख धीरे से मुस्कुराया।

“वैसे यह 24 मार्च को एक्सीडेंट में मारे गए ड्राइवर के सिर की सीटी स्कैन रिपोर्ट है।” डॉ. मजूमदार ने धीरे से जोड़ा।

जयंत की मुस्कुराहट भाप बनकर उड़ गई। हड़बड़ाते हुए उसने पूछा, “आपका मतलब ड्राइवर के सिर में कोई अंदरूनी चोट नहीं है!”

“यह मैं नहीं ड्राइवर के सिर की सीटी स्कैन रिपोर्ट कह रही है।”

“मुझे याद है कि मैंने अंधे मोड़ पर ड्राइवर का फटा सिर देखा था।” जयंत चकराया, “क्या आप मेरे साथ कोई मजाक कर रहे हैं?”

“पिछले तीन दिनों में इस लाश की जाँच करते हुए मैं खुद मजाक बन गया हूँ।” डॉ. मजूमदार खीझते हुए बोले, “मुझे शक हुआ कि यह ‘ब्रेन-डेथ’ का केस है। इसलिए मैंने ईईजी तकनीक से लाश के मस्तिष्क की इलेक्ट्रिकल एक्टिविटी रिकॉर्ड की।”

जयंत का आधा दिमाग स्ट्रेचर पर रखी रोहन की हमशक्ल लाश में उलझा था और आधा दिमाग डॉ. मजूमदार की बातों में।

“इस लाश की ईईजी रिपोर्ट देखकर दुनिया का कोई भी मस्तिष्क विशेषज्ञ इसे किसी सामान्य व्यक्ति की रिपोर्ट कहेगा...” डॉ. मजूमदार जयंत के करीब आकर उसके कान में फुसफुसाए, “...किसी लाश की नहीं!”

“मतलब?” जयंत को अपने बदन के रोंगटे खड़े होते हुए महसूस हुए।

“ईईजी रिपोर्ट के मुताबिक लाश का मस्तिष्क किसी सामान्य जीवित व्यक्ति के मस्तिष्क के समान इलेक्ट्रिकली एक्टिव है।” डॉ. मजूमदार ने जेब से रुमाल निकालकर माथे पर छलक आए पसीने को पोंछा, “अपने होश खोने से पहले दोबारा सुन लो- इस लाश का मस्तिष्क किसी जीवित व्यक्ति के मस्तिष्क के समान इलेक्ट्रिकली एक्टिव है।”

डर की ठंडी लहर ने जयंत को अपनी गिरफ्त में ले लिया। अपनी जगह पर वह बुत बना खड़ा रह गया। एक तरफ स्ट्रेचर पर पड़ी रोहन की लाश उसके रोंगटे खड़े कर रही थी, तो दूसरी तरफ डॉ. मजूमदार की बातें उसका दिमाग सुन्न कर रही थीं। उसका सिर अभी तक फटा नहीं यही गनीमत थी।

“इंसानी मस्तिष्क को अगर नौ मिनट तक ऑक्सीजन नहीं मिले तो मस्तिष्क कोशिकाओं को स्थायी नुकसान हो सकता है और मस्तिष्क हमेशा के लिए बंद हो सकता है।” डॉ. मजूमदार ने अपनी बात जारी रखी, “मस्तिष्क में ऑक्सीजन खून के जरिए पहुँचती है और शरीर में खून की लगातार सप्लाई के लिए दिल एक महत्त्वपूर्ण अंग है।”

“आपने अभी बताया था कि लाश का दिल बंद है।” डॉ. मजूमदार की हर बात जयंत के दिमाग पर हथौड़े बरसा रही थी।

“साथ में यह भी बताया था कि लाश का मस्तिष्क जीवित है।” डॉ. मजूमदार बोले।

“तो मस्तिष्क तक खून...” जयंत कहते-कहते रुक गया। दिमाग जैसे सुन्न पड़ गया था।

“दिल बंद होने पर भी लाश खून पैदा कर रही है। इसी वजह से पाँच घंटे शवगृह के ठंडे फ्रीजर और कमरे में यह पिछले तीन दिनों से सामान्य व्यक्ति की तरह गर्म है।”

डॉ. मजूमदार के शब्द जयंत के कानों में पिघले लोहे की तरह पड़े। अगर यह डॉ. मजूमदार का कोई मजाक है तो वह अपने मजाक को कुछ ज्यादा ही खींच रहे हैं।

“तीन दिन पुरानी लाश में ताजा खून!” जयंत गुस्से से भन्नाया, “क्या मेरा खून सुखाने की कसम खाई है?”

“खून तो तुम्हारा अब सूखेगा!” कहते हुए डॉ. मजूमदार ने जयंत का हाथ पकड़कर उसे लाश पर रख दिया।